गोचाली

२०५१

"गोचाली"

अंक : १० वर्ष : २४

२०५१

"गोचाली परिवार" (नेपाल)

व्यवस्थापन तथा सम्पादन

"गोचाली परिवार" (नेपाल)

प्रकाशक :

थारू भाषा तथा साहित्य सुधार समिति

पश्चिमाञ्चल नेपाल

सहयोग रू. १५।-

मुद्रक : नबीन छापाखाना

गुलरिया, बर्दिया

सम्पादकीय व प्रकाशकीय

"मध्यावधि संसदीय निर्वाचन २०५१ ओर नजर दौरायवेर"

नेपालम २०५ स्थानके लाग हुई भिरल मध्यावधि निर्वाचनम देशके हरेक चुनावी क्षेत्रम विभिन्न राजनैमिक पार्टी हुँकन आपन पार्टीके झण्डा. घोषणा-पत्र, पर्चा, पोष्टर भित्तम विभिन्न रंगले लिखके आपन पार्टीके प्रचार प्रसार करल देख गैल। जनतनके साम्ने भोट माग जायबेर जौन फे पार्टी अप्न हुन जनतनके सेवा करुइया हुइतु कहके आपन प्रचार प्रसार करल देख गैल। जानो कि आब जनतनके कौनो समस्या फेन बाँकी नै रहजाई। तर दुःखके बात का बा कलसे जब चुनाव होके सेकी तब जीतके संसदके लचकदार घुम्ना कुर्सीम पुग्लसे ऊ नेता हुँक्र आपन चुनावी समयम बोलल बात बिसरा दर्थ की जसिन लागथ काकर कि असिन नेता हुकन चुनके सरकार गठन करक लाग हरेक पाँच-पाँच वर्षम हुइती रहथ तर जनतनके समस्या ज्योका त्यो रहल जसिन अनुभव हुइथ।

खैर यी बात छोडदी आब राजनैतिक पार्टी हुँकनके चुनावी कार्यक्रम हेरी त चुनावम आपन पार्टीहन विजय बनाइक लाग गाउँ तथा शहरम कहुँ आम सभा, कहुँ नारा जुलुश, कहुँ साईकिल -याली, कहुँ काँग्रेसके सर्वमान्य नेताके आगमन, कहुँ कम्युनिष्ट पार्टीके केन्दिय नेतासे आमसभा हुन सम्बोधन कर्ना जसिन अनेक किसिमके कार्यक्रम सुन व देख मिलल। आपन-आपन पार्टीके झण्डा फहरैती आपन-आपन चुनावी क्षेत्रम भोट मग्नाके प्रतिस्प्रर्धा करल देख गैल। प्रचार प्रसारके क्रमम मोटर, रिक्शा, साईकिल आदि सवारी साधनके प्रयोग तथा लाउडस्पीकरले जोड-जोडसे आवाज निकारके प्रचार करल देख गैल। विभिन्न ठाँउम राजनैतिक पार्टी हुकनके ब्यानर टाँगल देख मिलल। यीह सन्दर्भम एक पार्टीके कार्यकर्तनके दोसर पार्टीके कार्यकर्तनसे जम्का भेट हवाए बेर वाद-विवादके साथ-साथ आपसम पिटा-पिट फेन करल सुन मिलल। ओत्रकेल कहाँ हो यहाँ त ठाँउ-ठाउँम गोलीकाण्ड होके मर्नँनके ज्यान समेत गैल कना बात थाहा मिसल बा।

वास्तवम यी एक्को नै मजा बात हो काकर कि निर्वाचनम विजय होके गैलसे घुम्ना कुर्सीम बैठना व भत्ता पचैना नेता तर चुनावके

समयम रात–दिन मेहनत कैके प्रचार प्रसार कर बेर सामान्य कार्यकर्ता तथा जनता हुँक्र आपसम बाझा बाझ कर्ना, एक्क घरम फेन राजनैतिक कारणले मन मोटाब हुइना। हुइना त बहुदलीय प्रजातन्त्रम आपन ईच्छा अनुसारके प्रतिनिधि चुन पैना तथा आपन बिचारम सही काम करी कना विश्वास रलक पार्टीके प्रचार प्रसार फेम कर पैना अधिकारके व्यवस्था बा। तर फेन चुनावके आवेशम आके मनै एक्थो विष लगइना लदीयक मच्छी महुराइल जसिन देख पर्थ। साधारण जनताकेल नाही बल्की कुछ बुज्जुक कार्यकर्ता तथा सर्वमान्य नेता हुकन फेन वो विषक हावा लागल देख गैल। खास कना हो कलसे आपन पार्टीके सिद्धान्त तथा सिद्धान्त अनुसारके मजा व्यवहार देखाके जनतनके मनहुन जीत सेक्के हुकनके मत प्राप्त कर पर्ना हो। तर यहाँ त का देख सुन मिलल कलसे खाली आपन पार्टीहुन केल मजा देखैना ओ दोसर पार्टीहुन असिक फेन खराब देखैना अर्थात आपन पार्टी भित्तरके खराबी हुन भर लुकाए खोज्ना तर दोसर पार्टीके करल कौनो मजा काम बा कलसे वाकर उल्लेख नै कर्ना असिन काम राजनैतिक कार्यकर्ता तथा नेता हुकनके बानी व्यहोरा से थाहा मिलथ। तर वास्तवम असिन नै कैक आपन पार्टीके भित्तर रहल खराबी पना हुन सुधार पर्ना असिन देख जाइथ।

सरसर्ती ह्यार वेर जनतनसे भोट मांग्के आपन पार्टीके सरकार गठन कैक देश तथा जनतनके सेवा करम कना बचन देहुइनी आपन चुनावी अभियान आग बढैना क्रमम खास कैक नेपाली कांग्रेस ओ ने. क. पा. (एमाले) के बिचम प्रतिस्प्रधा हुइल देख गैल। वाकर पाछ–पाछ रा. प्र. पा. फेन लागल पुगल मस चुनावी होडबाजीम दौंरल देख गैल। अस्तहँके अन्य पार्टी हुँक्र फेन चुनावी अभियानम लागल पार्टी हुँकन के बिचम प्रतिस्पर्धा हुइल देख गैल कलसे दोसर ओर चुनाव बहिष्कारके नारा देती संयुक्त जनमोर्चा (भट्टराई समूह) नेपाल फेन लागल पुगल मस आपन अभियानम भिरल देख गैल। ज्याकर अनुसार संसदीय चुनाव कलक केवल जनतन झुकाके बुर्जुवा बगाल हुकनके शासन कर्ना जाल हो। संसद कलक धनी वर्गनके गफ कर्ना अखाडा हो। धनी वर्गके मनै संसदम जीतके जैथ ओ आपन फाईदा हुइना किसिमके ऐन कानूनके निर्माण कैके गरीब हुकन दबैथ कना बात सुनैती वास्तविक श्रमजीवि जनतनके लाग फाइदा हुइना काम हुँक्र कुछु फे नै कर्थ कना बिचार गाउँ, शहर, टोल आदि स्थानम आपन किसिमके आमसभा, नारा–जुलुश, कोण सभा, रातम मशाल जुलुश आदि कर्ति संसदीय निर्वाचन बहिष्कार तथा नयाँ जनवादी क्रान्तीके तयारी कर्ना बात जनतनके साम्ने रख्ती आघ बढल फेन देख परल।

असिकन समग्र रुपम ह्यारबेर संसदीय निर्वाचनके समयम खास कैक दुइ किसिमके बिचार आइल देख गैल। एक किसिमके बिचार निर्वाचनम भाग लेक आपन पार्टीके सरकार गठन कर्ना औ दोसर बिचार सँसदीय निर्वाचनके बहिष्कार कर्ना। यीह कारणले हुई सायद जनता हुकन अलमलमा पर्ना काकर कि एक्थो आके फल्ना पार्टीक चुनाव चिन्हम छाप लगैहो कना दोसर आके और पार्टीके चुनाव चिन्हम छाप लगाए सिखैना तथा तेश्रा आके चुनाव कलक धोखा हो, जनतन फँसैना जाल हो, भोट दारके जनतनके कौनो फे समस्या समाधान नँ हुइती उह मारे भोट दार ना जैहो कहके कना। अस्त अस्त बात चुनावके समयम सुन मिलल।

तर ज्या जसिन किसिमके बिचार देखा पर्लसे फे चुनाव आपन हवाए पर्ना समयम होके छोडल। चुनाव हवाएबेर देशके अनेकौ ठाउँम अनेक किसिमके घटना घटल। बुथ क्याप्चर मत पेटीका भरैना सामान्य रूपमे भोट दार नै जाके हुइलसे फे बहिष्कार कर्ना आदि काम देख परल। ज्याकर कारण देशके अनेकौं टाउँम रलक निर्वाचन केन्द्र स्थगित फे हुइल ओ कुछ समयके बाद पुन: निर्वाचन कर पर्ना देख गैल। असिकन निर्वाचन कर वेर सरकार हन धन जनके शक्ति कला प्रयोग कर परल हुई कना बात सम्पादकके पहुँचसे दुर रलक ओर्से उल्लेख नै कैल गैल हो।

संसदीय निर्वाचनके परिणाम अनुसार सरकार गठन करक लाग आवश्यक बहुमत कौनो फे पार्टी प्राप्त कर नै स्याकल। उह वर्से सबसे धेर सीट (८८ सीट) जीतके गैलक पार्टी ने. क. पा. (एमाले) १ महिनाके भित्तर समर्थन प्राप्त कर्ना हिसाबसे सरकार गठन करल ओ आजके मितिसम समर्थन प्राप्त कर्ले बा। भविष्यम कहाँसम समर्थन प्राप्त रथिस हेर्ना जाई एमालेके अल्पमतके सरकार हन। एमाले चुनावके समयम जनता हुकन जौन आश्वासन दिहल उ कहाँ सम पुरा कर स्याकथ कना चिजके मूल्याँकन कर्ना बाँकी बा, तथा जनतनके हित संसदीय चुनावसे हुइथ या नै हुइथ कना बात पाठक वर्ग हुकनके साम्ने प्रश्न चिन्ह रख्ती अन्त्यम "गोचाली" पत्रिका अंक १०, वर्ष २४ हन बौद्धिक, आर्थिक, नैतिक समर्थन अर्थात हरेक किसिमके सहयोग दिहुइया शुभचिन्तक हुकन मुरी मुरी धन्यवाद।

जय गोचाली परिवार !

२०५१ साल बैशाख १ गते गोचाली परिवार

थारु भाषा तथा साहित्य सुधार समितिके भेला जिल्ला बर्दिया गा. वि. स. धधवार वा. नं० ८ ककरहवामा सम्पन्न हुइल। आगामी कार्यक्रम सञ्चालनके लाग तपसिल अनुसारके गोचाली परिवार गठन कैगैल।

गठन

संरक्षक

श्री महेश चौधरी दाङ्ग

अध्यक्ष-	श्री कृष्ण प्रसाद चौधरी	बर्दिया
उपाध्यक्ष	श्री चक्र बहादुर चौधरी	"
कोषाध्यक्ष	श्री सगुन लाल "	"
सचिव-	श्री खुशीराम "	"
सदस्य	श्री नारायण "	"
"	श्री मंगल "	दाङ्ग
"	श्री साधुराम "	बर्दिया
"	श्री जीत बहादुर "	बाँके
"	श्री गोविन्द "	कञ्चनपुर
"	श्री पुनाराम "	बर्दिया

संपादक परिवार

श्री सगुन लाल चौधरी बर्दिया
श्री जग्गु प्रसाद " "
श्री भगवती " दाङ्ग
श्री माल " "

सल्लाहकार परिवार

श्री दुर्गा प्रसाद चौधरी बर्दिया
श्री वेद प्रसाद " "
श्री भगवती चौधरी दाङ
श्री टेक बहादुर चौधरी "
श्री राम शरण " बर्दिया

प्रचार प्रसार परिवार

श्री कृष्ण थारू बर्दिया
श्री जग्गु प्रसाद चौधरी "
श्री कृष्ण कुमार चौधरी बबई क्याम्पस बर्दिया
श्री दुर्गा प्रसाद " बर्दिया
श्री कर्ण बहादुर " "
श्री जीत राम " "
श्री खुशीराम " "
श्री राम दुलारे " "
श्री जलवीर " "

अर्थ संकलन परिवार

श्री केशव बहादुर चौधरी बर्दिया
श्री साधुराम चौधरी "
श्री कालीराम " "
श्री लौटन राम " "
श्री रूप लाल " "

विषय–सूची

सि. नं.	का	कहाँ
१.	स्वागत गीत	१
२.	मैं कौन देवताके पूजा करू	२
३.	छाई फे लर्का हुइत	८
४.	अधिकार	१०
५.	साँसदजी हुँक	१८
६.	गीत	२०
७.	हमार समाज	२१
८.	उठो गोचाली	२२
९.	अधकचरा प्रेम	२३
१०.	१६ थो मुक्तक	२८
११.	नेपाली महिला अधिक वांचत	३२
१२.	लपेटा गीत	३६
१३.	वीरताके निशान देखा देव	३७
१४.	सपना	३८
१५.	थारु जातिके परिचय	४०
१६.	कन्हैं	४२
१७.	मै का लिखुँ	४३
१८.	राउदेव पैधार	४५
१९.	बडकीमार संरौती पैधार	४७
२०.	आर्थिक सहयोगी	४८

स्वागत गीत

ले०जे०पी चौधरी,बर्दिया

स्वागत बा ! स्वागत बा !! स्वागत हमार बा ।।।
अघन घरके काम छोरके, आँधी बौखा नै मानके
घाम व पानी सहके, साहित्य गोष्ठीम अवैयन,
स्वागत बा । स्वागत बा ।। स्वागत हमार बा ।।।
गोचालीक सीतर छाँहियक ते, आपन समजके मैंयक ते,
प्रगतीशील साहित्यक ते, भाषाके बिकास करक ते,
योगदान देना गोचालीन
स्वागत बा । स्वागत बा ।। स्वागत हमार बा ।।।
समाजके अन्ध बिस्वासह, कुरीती असत्यह,
पिछरल हमार समाजह, सही डगर देखुइयन,
स्वागत बा । स्वागत बा ।। स्वागत हमार बा ।।।
शोषणके जाल फरुइयन, अन्यायके बिरोध करुइयन,
आपन हक अधिकारके लाग, क्रान्तिके बिगुल फुकुइयन,
स्वागत बा । ।।।
साहित्य गोष्ठी करुइयन, असल समाज बहुइयन,
चेतनाके बिकास करुइयन, क्रान्तिके डगर खोजुइयन,
स्वागत बा । ।।।
मेहनत कैके खबैयन, पसिना आपन बहुइयन,
किसान मज्दुर कमैंयन, गरीबके पक्ष लिहुइयन,
स्वागत बा । स्वागत बा ।। स्वागत हमार बा ।।।

मै कौन देवताके पूजा करु !

सगुन लाल चौधरी, बर्दिया

धर्म शास्त्र अनुसार रामके पूजा करूँ
जौन राम सर्वशक्ति सम्पन्न रलह
भूत वर्तमान व भविश्यके ज्ञाता रलह
विष्णुके अवतार आदर्श पुरूष रलह
तर रामायणके पाठ पढ वेर
दादु भाईके झगडाम हस्तक्षेप कैके
धोका देक बाली हेन मर्नी
राम राज्यके नाउँम गरीबनके हत्या कैना
धुर्त पुरहीतके चुगली सुनके
तल्लो जातिनके शोषण कैना
त्रिकाल दर्शी होके फेन
आपन जनी सीताके
रक्षा व विश्वास फे नै कर्ना
उह वर्से महीं कहनास लागथ (१)
मै कौन देवताके पूजा करूँ ?

आज्ञाकारी मानके रामके प्यारा भाई
लक्ष्मणके पूजा करूँ की
दाई बाबु व जन्नीक माया मारके
दादु भौजिक सेवा कर्ना
रामके आज्ञाकारी बन्के
राती दिन पहरा लगैना
जसिन कठिनाई फेन सहन कर्ना
विर योद्धा भैया लक्ष्मण भी
बनवास के समयम
घनघोर जंगलके बिचम
चिरैचुरूङगनके सुमधुर ध्वनी
आपन संधी सर्पणके ख्याल कर्ती
महाज्ञानी, सुप्रसिद्ध न्याय प्रेमी रावणके
बहिनिया सुर्पणखा बन वा घुमतह
जहाँ राम सीता लक्ष्मण कुट्टी बनैल रलह

उ समयके परम्परा अनुसार
आपन व अप्न रोज्ना
रोजल बरसें बिवाह कैना
आपन भाग्य अप्न वनैना
दाई बाबा केवल रीत पुगा देना
उह वर्स राम लक्ष्मण जसीन थरैन देख्के
सुर्पणखा लवण्डी आँख लराईत
बिचारी पाछ ख्याल ख्यालम
आपन इज्जत लुटाइल
दादु भौजीन आँख छलके
दुष्ट लक्ष्मण अस्तित्व लुटना
एकान्त बन्वा भित्तर रोदन क्रन्दन
करती–करती
सतीत्व वचैना के लाग गुहार मगती
धनुषधारी लक्ष्मणके शिकार वना
अन्तम नाक – कान कटवा पैना
अतिन अवला नारीके दुर्मत लेना
तब मैकहनास लागथ

मै कौन देवताके पुजा करूँ ? (३)
दादुक मैयाँ कर्ना बहाना लेके
सेना लेके बन्वम जैना
बँडाई कर्ना बातवरण नै बनब वर्स
ग्वारक पौवा समेत लन्ना
१४ वर्ष नंगत ग्वारा नेगैना
भरसक जंगली जनावरसे
अथवा विषैना साँपनसे
कटावा देहाके दादु भौजिके
आदर कर्ना रामके भैया
भरतके बदमासी देख्के
महीह कहनास लागथ
मै कौन देवतक पुजा करूँ ? (४)
विष्णुके अवतार भगवान रामके
बाबा वनके दशरथ राजा
उ समयके महापुरुष व ज्ञाता

देश दुनियाँके पालन कर्ता
तर एक रानी हुइती हुइतो
दोस्रा विवाह कर्ना
उह नै पुग्के तिसरी लन्ना
धर्म शास्त्र अनुसार पर स्त्रीके
मुह नै हेंर्ना
तभु पर पहिला दोस्रा तेस्रा हैना
आपन तर्फसे लड्का नै जर्मलसे
आपन जन्नीन अनैतिक काम करेना
उहीम फेन जन्नीक गहना लाग्के
छावा पतोहियन बनवास पठैना
उह वर्स मही कहनास लागथ
मै कौन देवताके पूजा करूँ ?

॥ ५ ॥

रामायणम नाउँ लिखल बा परशुरामके
बाकर काम जानी विरोध कर्ना रामके
एक दिनके बातहो, उह समयके
दाई बाबक झगडा हुइल बखतके
बाबक आज्ञाकारी परशु रह
नारीन दबैना हेल्हा कर्ना चलन रह
शोषण दमन अत्याचार कर्ना
श[illegible]के [illegible] ना[illegible]के हत्या कर्ना
परशुके बाबा अत्याचार
परशु रह बाबक आज्ञाकारी
दानव जसीन बाबा लछार–पछार कर
छावा परशु तमासा ह्याद
अन्तम हत्यारा बाबक आज्ञा मान्के
आपन दाईक छ्याँवा काठ्के
मातृ हत्यारा परशुराम बनल
उव वर्स मही कहही परस
मै कौन देउता के पूजा करूँ ?

॥ ६ ॥

पाप करूईया पापी हो
दान करूईया दानी
लुट करूईया लुटेरा हो
ज्ञान दिहुईया ज्ञानी
वस्तके
न्याय करूईया न्यायी हो
अन्याय करूईया अन्यायी
उह वर्से धर्म शास्त्रम लिखल पैबी
समय-समयम विष्णुके अवतार देखबी
विष्णु कलक देवतावनके अगुवा
राक्षस कलक शोषीत जनता
जब-जब शोषीत जनता आग बढल
विष्णुके अवतार नाउँसे दमन कर्ल
उ समयके जालन्धर वीर रह
शोषीत जनताके अगुवा रह

दोसर तरफ

जेही हम्र विष्णु भगवान कैके पूजा कर्ी
हमार अन्न दाता प्राण दाता कर्ी
साँझ विहान हात जोर्ी
विष्णु-२ कैके प्रार्थना कर्ी
उह विष्णुके अवतार हन हेंरी
जड्याँहा भँगाहा महादेव समेत आपन
चरित्रहीन जाली फटाहा देउतावन
एकजुट होके जालन्धरके विरोध कैना
शोषण दमन अत्याचारके पक्षम जैना
अन्तम जालन्धरके विजय देखके
छल-कपट कैके जालन्धर पत्नीके इज्जत लुट्ना
भगवानके नाउँसे छलकपटके काम कैना
उह वर्से मही कहही पर्ी हुईल
मै कौन देवताके पूजा करूँ ?

॥ ७ ॥

तमाम सन्त ऋषी मुनिन्के
जीवनी देखबो नाउँ सुन्बो
महात्मा सन्त ऋषि मुनि कैके
पराशर नाउके ऋषि मुनि रह
लाउ चलुईया लौवाके बेटीया रह
"मत्स्य गन्धा" नाउँके लवण्डीया रह
उ पार जैना बहाना लेके
एकान्त रहल लड्की देखके
उ युवतीके हुर्मत लुटल
मर्भ रहलक कारण घरवाली बनाईल
उह वर्से मही कहनास लागथ
मै कौन देउताके पूजा करूँ ?

॥ ८ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश मध्ये
सृष्टकर्ता ब्रह्मा हुइत
यी धर्मशास्त्र के कहाई हो
चार वेदके महान ज्ञाता
जीव जगतके सृजनकर्ता
यी समाजके बुझाई हो
बड्वार मनै ज्या-ज्या कर्थ
सबकु ठीक हो कहना बानी
आपन उपर अन्याय पर्लसे फे
भाग्यह दोष देना जानी
शक्तिके भरम अन्याय कर्लसे फे
भगवानके लिला कहानी
हमार समाजके लेखक हुक्रन्के
सत्य घटना लुकैना बानी
अनैतिक भ्रष्ट बडवार मनैनके
गुनगान केल ग्रैथ जानी
यी समाजन डाँका चोर बदमास तमाम रथ
जत्रा बदमासी कर्लसे फेन आपन घर वचैथ

डर, चार वेदके ज्ञाता
जीव जगतके सृजनकर्ता
लाज घीन व डर नै मान्के
इज्जत के ख्याल नै कैके
आपन छाईके हुर्मत लुटना
उह छाईह जन्नी बनाके
जीव जगतके सृष्टी कर्ना
जौन ब्रह्मा पाप करना
बाकर हम्र पूजा कर्ना
उह बर्से मही कहनास लागथ
मै कौन देवताके पूजा करूँ ?

॥ ९ ॥

भाँग खाके भगवाइल रहल
पार्वतीह छोडके बिदेश घुमना
पशुपंक्षी जेहीसे फेन बासना तृप्ती कर्ना
कैयौ बर्ष दुनिया घुमना
ऐसिन गँजडी मवादेव देखके
आपन अवस्था अप्ने सोंचके
जवानीके धार छल नै सेकके
छावा पाइल गणेश नामके
इज्जत आपन छुपाईक लाक
शरिरके मैलसे बनल कहथ
बयाकर लडका के हो कहना
महादेवके थाहा नै रहना
सर्व ज्ञाता महादेव होके
जन्नी व छावाके थाहा नै पैना
बिना बाबक छावा जर्मन
ऐसिन महादेव पार्वती रहना
उह बर्से मही कहही पर्ना
मै कौन देवतके पूजा करूँ ?

अधिकार

–खुशीराम चौधरी
धोविया, बर्दिया

दिनभर कमाही कैके आधा पेट खैना
अधिकार पैलक बाट कह नही पैना
अधिकार पैलक बाट कहबेर बन्दुक तेसैंना
रात–दिन काम कैके कुछुके नै पैना ॥

सक्कु कमाही देलसे फे जिम्दारनके भूँडी नहीं भर्ना।
अधिकार पैलक बाट कहबेर बन्दुक तेसैंना।
रगत पसिना चुसत–चुसत हड्डी केल बचैना।
आपन रगत चुसबेर थाहाँ नही पैना॥

उठो जागो ए मोर गोचाली अधिकार लिहना बेलामा।
आधा रातसे खेतवा जोत्थी बसिया मार खैना।
खेतवा जोत्के घर ऐथी भोक्टी ओंधाईल रहना।
उठो जागो ए मोर गोचाली अधिकार लिहना बेलामा॥

पिठार निकरल झुलुवा घरथी, चुट्टी निकरल टोपी।
बाबक दिहल जरम कैसिन बितैना।
उठो जागो ए मोर गोचाली अधिकार लिहना बेलामा।
मरी–मरी काम कर्थी मारक पानी पिथी।
कलक बाट मन्ती मन्ती लगादिहल लट्ठी॥

उठो जागो ए मोर गोचाली अधिकार लिहना बेलामा।
एक होके समाज हन बलगर बनाई रखना।
सामन्तिक बनाईल कानून एक होके फेंकना।
उठो जागो ए मोर गोचाली प्रगतिक डगरम लम्कना॥

॥ १० ॥

जब जौन देउताके नाउँ लेना
बस्त वस्त बयान देख पर्नां
बिना बाबक गणेश जस्त
भगवान कृष्ण पैंबो वस्त

आपन बहिनियाके कोखसे
जौन लडकाके जरम हुइना
उह लडका आपन मामा कंशके
सर्वनाश कर्नां कहना

उह समयके गुरूपुरोहितके चलाकी रह
कंशके शासन टुटैना चाल रह
वहिनिया मर्लसे पाप हुइना
भैने मर्लसे महाम पाप
उह वर्से शासन सत्ता कसीक बचैना
वासुदेव देवकी अलग रहना
जेल कम्पाउण्ड अलग रखना
कडा निगरानी चौकस पहरा देना
तभु पर

पार्वतीके आँगक मैलसे
गणेश जर्मल जसीन
देवकीके गर्भसे कृष्णके जनम हुइना
दाई बाबक सम्बन्ध बीना
छाई छावा जरम पैना
अस्त अस्त लिला देखैना
उह हमार भगवान ब देउता रहना
उह वर्से मही कहनास लागथ
मै कौन देउताके पूजा करूँ ?

॥ ११ ॥

गाउँम जैंबो गुरूबा कहथ
गाउँ गवलीयन मै वचैंबु
देशम जैंबो देश बँधीया कहथ
देश दुनिया मै खेलैंबु
घरम जैंबो घर गुरूवा कहथ
घर दुवार मै हेंरबुँ

तर, ज्याकर घरम भँकरी खाली
झुर भँदीयक करै खाली
रोगिया रोगले ढलल रही
वाकर घरम ,कौनो गुरूवा नै जाई
उह वर्से,

अन्तम मही कहनास लागथ
छाक – बास कपासके लाग
स्वस्थ्य शिक्षा रोजगारके लाग
शोषित उत्पीडित जनतनके लाग
शोषण दमन अन्याय अत्यारके विरुद्धम

शोषित जनतन मुक्ती देहुईना
गरीबनके उत्थान कैना
शोषण रहीत समाज सृजना कैंना
उह वर्से, महि कहनास लागथ

उह देवताके मै पूजा करूँ !

"छाई फे लर्का हुइत"

–दुर्गा प्रसाद चौधरी
सुर्खेत क्याम्पस शिक्षा
बि. एड. दोश्रो वर्ष

समय २०५०/५१ सालक हिउँद महिना हो। विद्यालयमा लौव भर्ना हुइना समय विद्यार्थी लौव–लौव अनुहारके देखपर्थ तर लौव अनुहारमा खाली लवण्डन केल देख परत।

पात्र हुँक्र

सीता– आपन दाईक छोटकी छाई
जगमोहनी– सीतक दाई
किरण– सीतक दिदी
दिनेश– सीतक बडका दादु
श्याम कुमारी– किरणके गोही
शारदा– किरणके गोही

दिपक– दा! छोटकी भैंया आज पढ स्कूल नै जाइक लाग हो।

जगमोहनी– जाओ छावा, सक्कु भाई संग जाओ। पढ नै जैबो त गन्जा हो जैबो।

सीता– दा! महिह पढ्नास लागल मैं फे दादुनसँग स्कूल पढ जैम।

जगमोहनी– पढ जैंही, त्वार छेग्री–भेरी के चरा दे?

किरण– (सीता छोटी हुइलक ओर्से आपन दाईक बातह काट नै स्याकत, सीता अनमन हो जाइत, सीतक ओर्से किरण बोल्देहत) दा सीता बाबुह स्कूल पढ जाइदेओ, सक्कु दादु भैंयन जैथ, उही फे संग–संग जैना रहर बातीस उमेरके स्कूल जाई सुहैना बातीस।

जगमोहनी– वाकर छेग्री–भेरी के चरा देहिस? उ पढ जाइत।

किरण– दा! छेग्री मैं पलम गोरून सँग। कित महतान बुवह चराई कलसे त चरा दे। बुबह विघा फे बढ जैंहिस चार–पाँच ठो त बात।

जगमोहनी– महतान बुबा सीत ह करिन मजा मन्थिस। विचारी सीता मिझनी (मार) बोक–बोकके खवाईत कैक। त्वार बुबह (मार) के खवा देहिस।

किरण– दा! बुबक लाग मैं मिझनी (मार) बोवक लैजादेम हम्र घाँस काट जैना ओर त चरैथ सद्द। हम्र सद्द बुवह मिझनी खाइत भेटैथी।

जगमोहनी– यी किरण त खुब जन्नाह होंक बात बत्वाइत। धीह हो आपन बाबुह उस्कुइया। बात काट–काट्क ब्वालता। कबु मैं छेग्री–भेरी गोरूनसँग पलम कहत त कबु महतान बुवह चराई देना कैक कहत। खुब गोरूनसँग छेग्री–भेरी पलुइया हुइल बा, गोरू पल्ना त कर्रा बातीस। यही त (आपन दादु भैंयन) त्वार छावन पढत देखक रीस पो बातीस। त्वार दादु–भैंयन त लवण्डा हुईत। तुह्र लओंर्या मनैन काकर पढ परल।

किरण– दाई फे कसिन कह लागल। दादु–भैंयन पढल देखक रिसैलक त बात नैं बतोईस हुँ। बाबुह दादुनसँग स्कूल पढ पठाओ केल त कलक हो। बाबुह दादुनसँग जैना सजिलो हुईहिस पो कलक हो। दाई! का छाईन पढलसे बिग्रथ त? लओंरिन पढक काम नैं लागत त?

जगमोहनी– यी किरण त आम्हीन उपर हो–होक ब्वालता। छाई पढ्क बिग्रथ कि सप्रथ महिह थाहाँ नैं हो। छाई पराई घर जैना जात हुइतो। तुहन त भात भन्सा कर्ना केल त हो, भात–भान्सा कर पो सिखना हो। जन्नीन्हक काम तोहीह थाहाँ जो बात खुरू खुरू आपन काम कर्ना कहाँ गैलिस्। जा झट्ट घाँस काट, गोरून घाँस दर्ना जुन हो चुकलीस्। कब काटथ घाँस। कैह्ना बैनी तुह्रक कमाही? बहाँ देबी त थरैंक घर चल जैबो। (किरणके मन जर्थीस, छटपटाहत लग्थीस, उकुस–मुकुस हुइत, मुह फोरक कहक लाग रहत। तर समाजके कहाई ह समझदारत "छाई जुनी हारल (जुनी) कर्म हो" कहोरे से साथ नैं पैना जसिन बाखत ओ आपन कामस झट्ट घरसे निकर जाइत)

(दोस्रा नजर) दोश्रो दिन

किरण गग्री लेक घट्वम पानी लिह जाइथ। शारदा ओ श्याम कुमारी फे पानी लिह घट्वम रौल रथ। किरणह देखक किरणके गोही

हुँक्र खुशी देख पर्थं ओ दुरमे बोल कथं, आज खुब काम कैं रख्लो। बर्का बेर अस्या लगाक ऐबो नि कलौं, आब ऐही–आब ऐही कैंक खुब साहारा कलौं; उलीत बीलीत हेंतौं गैली। का कर नैं ऐलो ? कहाँ कट्लो घाँस ?

किरण– (छोटी उत्तर देती) आज ढील हो गैल। बारीम खोज–खाज कैंके बल्ल–तल्ल गैंजा भरँनु। भक्खर आइतु पानी लिह. आज बरा ढील हो गैल बा तुह्र पानी पुगा स्याकल हुइबो।

श्याम कुमारी– तुहिन त हम्र ढील कर कहल हुईनी ?
कसिक ढील कैं दलौं जनाब ना कारक नि आईसेक्लो ?

किरण– छी बरा ! यी त नस्से खोत्या खोत्याक पुछ लग्ली। आज जिन भुलावका। झन ढील हो जाई। तु त और दिन नैं जम्ना अस कथौं काल त भेट घाट हो जैवी (अत्रा बात कहती) किरण पाीक गग्री मुन्टम (कपारीम) उठाइत ओ एक्थो थेकनम लेक झट्ट–झट्ट आपन घर ओर लम्मा पैला सारथ। शारद ओ श्याम कुमारी भात बुझ नैसेक्त, किरणसे अवक बक्क पर जैंथ एक घची।

(तेश्रा नजर) तेश्रा दिन

बिहानके उठ्तीभी ग्वावर पानी कर्ना किरणके काम रथिस्। घर अंगना घोत्लैना फे ऊ आपन जिम्मा ठानथ ओ उह अनुसार करथ। गर्ग्री लेक घट्वा जाइथ। बिहानके समय ग्वाबर पानी कर्नाभा टिक्क हो जैथिस् किरण ह। दादु भैंयन खाना खवाक सक्कु भाँडा मिस मास्क सेक्ती ी भिज्ल हाँथ गैंजालेक घाँस काट घरसे निकरथ। शारदा ओ श्याम कुमारी फे घाँस काट जैना कैक भक्खर घरसे निक्रल रहथ।

श्याम कुमारी– राम ! राम !! हो गोही। (किरण फे आपन ओरें दुनु जन्हन राम ! राम !! बा कैंक फिर्ता करथ) काल्हीक बात त बाँकी बा, बरवाओ हली कसिन बात हो तुहाँर ! हम्र त बुझही नैं सेक्ली तुहाँर बात।

किरण– का बात रही! सीता बाबु दादुनसँग स्कूल पढ जाउँ कैंक दाईसे पुछबेर दाई जाई नैं देली। बिचारी सीता बाबु रूईती छेगरी छ्वारल। सीताह रूइत देखक म्वार मन फे रूई लागल। आंख सुबगैल ओ म्वार मन त काहाँ काहाँ स्वाँचल (दादु भैयन भर स्कूल

जैना हम्र छाई भर किऊ फे नैं स्कूल जाई पैना) मही रीस लागल व दाई से कनु बिचारी ह पढ जैना रहर बातीस बाई देओ। बाबु कलक उह केल त हो उही केल त पढाई परी चार-चार थो दादु भैयन जैथ नाही ? अत्रा बात कहबेर हमार दाई त मही ह उसकरल (गरीयाय) लागल, तैंहें बडा जन्माह हो गैल्या कति मही त आपन लर्का अस नैंकराइल। दादु भैंयन पढत देखक आँख फुट्थीस कैंक कह लागल।

श्याम कुमारी– काकर हमार दाई–बाबा हमन (छाइन) आपन लर्का अस नैं कतैं ? आखिर हम्र फे त उह क्वाखमसे जमली। दशैंक छुट्टी हुईलक दिन दादुन घर रहल। दश्या आइता कैंक बडा खुशी देख परत। दादुन्हक छुट्टी बातीन कैंक पै दादुन से कनु "दादु तुन्हक छुट्ट होगैल दश्या फे लग्गहें आ रहल, वोलो घाँस काट देह, ध्यार घाँस रही त हम्र फे तुन्हक सँग नाच ह्यार जैंबी। गोही-गोही दश्या मनैंबी अत्रा बात कहबेर हमार दाई त महीह कह लागल हेरौ बिना भाभी लाज नैं लाग्थुइम् आपन पढना दादुन अह्रइता। आपन जाँगर ओराइतील और का–का कहल कानी पै त झट्ट घरम से निकरके घाँस काट आगैंनु।

शारदा– छाईन्ह क्याकर घरम सुख बात ? सकुन्हक ओस्तह त हो। हम्र हें त दादु भैंयन पढाईभी घरक सक्कु काम उसार्क। लुगा फाटा फे हम्र हे धो–धाक स्कूम जैना टीक्क पारदेथी। जथ्याक कर्लसे फे छाईन्हक कमाही कहाँ देखही ओ के बोल्दे छाइन ओर्ॅ। सारा दुनियाँम अस्तहें देख परथ। "छाई जुनी हारल जुनी हो कैंक हेल्हा कर्थ" "छावन केल त आपन लर्का अस करैंथ बुढाइलम छावन सेवा कर्थ कैंक" छावन से ध्यार त हम्र कथौं तर हमार सेवाह कहाँ देखही। आजकाल फे त कति बाती। पराई घर जाके फे केक्रो ना केक्रो दाई बाबक सेवा कर त जैंथी। अस्तह हमार दादु भैयन फे केक्रो ना केक्रो छाइन त लनहीं सेवा कर्ना कैंक। तब्बो फे नैं हो छाइन्हक सुख।

किरण– गैंजा भरैलो की नाँही ? बात–बातम ढील हो चुकल झट्ट जाई, गोरू छटपटाई हुइहीं। तिन्यो जान घाँसक भरूवा उठैंथ ओ झट्ट–झट्ट घर ओर ऐथ।

चौथा नजर (चौथो दिन)

दिनेश– (दाइसे पुछथ) दाई ! किरण बाबुक आजकाल जीऊ ठीक नै हुईतीस की का ? मुर झुराइल अस देख परत। बोल्ना फे कम ब्वालथ और दिन त तुह छाई–दाई नस्से बत्वाओ। आजकाल त बतोईना फे नै बत्वाईत देख्तु।

जगमोहनी– का हुईहिस रीसाइल हुई महीसे।

दिनेश– काकर रीसाई ओस्तहँ, कुछु कै देहल हुइबो त नै ?

जगमोहनी– काकर नि कव्या त छावा। बडा जन्नाह होक जबाफ सवाल करतह। सीता स्कूल जाईक लाग रह। सीतक ओर्से लागक सीतह जाई देओ कैक कह तह। सक्कु छावा पढ पढैलो हमन छाइन भर नै पढाक ग्वाबर पानी, चौंस पात केल कर पढैनो कैक कहतह। सीताफे स्कूल जाईक लाग खुब रूइतह, थप्पर देहीनु त चुपाईल ओ छेग्री लेक गैल। ग्वार बड्की (बर्की) बाबु किरण जुन कोन्टीम बाक ढोकाइल रह, गोरू बाम लग्लीस त सम्झल काहुँ की आपन बाबक डर डराके चुपैल घाँस काट निकल। रह था छावा कै दिन नै बोली सोच्क आपन जीउ अन्हें सुखाई।

दिनेश– किरण बाबु ठीक्क त कहल रह। तुहनै बुझबैथो। छाईन म वर्की अस नै करैथो। बिचारी बाबु हुकन बिनसेत्ती रूवाक।

जगमोहनी– छाइन्हुक रूइलक त दुःख नै लागत। छाई त दान्बे बातम फे रूई लग्थ ओ झट्ठ सुफल फे जैथ। सिहाँ त हम्र छाइन बह्ला देना केल त हो, जुनी कटैना त अन्त हुइतीन। बुढाइलम रेखदेख करूइया त तुह हुइतो छावा। तुन्हक ओझा छाइन काहाँ माया कर सेक्बी।

दिनेश– (दाईक बात सुनके दिनेशह रीस त उठथीस तर उहीह यी फे थाहाँ रथिस की शिक्षाक अर्थ नै बुझके हो कनी, उ सम्झौना हिसाबसे कहता)

"**Men and women are two wheels of a cart**" छाई छावा कना त एक्थो लरीयक दुईथो चक्का हुईती। दुइथो म एक्थो चक्का कमजोर हुईलशे लरीहा आघ बढ स्याकत, ओस्तह त छाई–छावा मध्ये छाइन कमजोर रह ही त

हम्र आपन स्वाँचल अनुसार विकास् के कामम आघ बढ नै सेक्ती। छाई छावा त तुन्हक दुईथो आँख अस हुइती। दुनु आँख बराबर काम करत ओ दुनु आँखक बराबर सेवा कर परथ। तुह त एक्क थो आँखक सेवा कैक दोश्रा आँख (छाइन) हुईती–हुईती कान (बनैल बाटो सताज ह) बनल बाटो।

दुइथो हाँथ एक्क जीउम लागल रती–रती फे दाव्री हाँथ कैक हेला कर अस छाइन दाव्री हाँथ बनैल बातो। जन्नी मनै ओ पुरूष मनै बराबर हुइत कना तुहन थाहा नै हो। हम्र फे पुरूष अस काम कर सेक्बी कना घमण्ड नै कर सेक्थो। भारतम जन्नी मनैया (इन्दीरा गान्धी) राज चलैलक बात तुहन थाहा जो बा। का ऊ पुरूष अस काम कर नै स्याकल रह त ? पक्का फे ऊ स्याकल रह। पुरूष अस काम कर स्याकक लाग पढ परथ, ऊ रह। पढ्लये जन्नी मनै फे सक्कु काम कर सेक्थ। हमार बाबु हुँक फे पढल रत त हमन सक्कु क कर सेक्ने रलह। आजकाल त झन बिना पढल काम नै चलाए सेक जाइत। तुहन थाहा जो बा पैसा नै चिन्क काम नै चलाए सेक्लक बात। शहर बजारम जन्नी मनै प क सक्कु काम कर सेक्थ। पढैना मुह लगैना आजकाल त झन बस, चित्गारी फे जन्नी मनै चलाए लाग गैल। हमार गाउँमा एक्थो जन्नी डक्टरन्या सूई लगाए आइत देख्लो त का ऊ बिना पढल सूई लगाए जानल त ? कसिन धुन्यार से सम्झा–सम्झा बत्वाई तह। पढल से ज्याफे काम कर सेक्थ जन्नी मनै। सीता बाबुह फे पढाई परथ। छाई–छावा कना त दाई–बाबन के दुईथो आँख अस हुइती। उह ओर्से छाई–छावम बराबर कराई परथ। किहु काखा, किहु पाखा नै कराई हुइत।

जगमोहनी– (लम्मा साँस लेक) जौन बात बतोइल्या ठीक्क हो छावा। बिना पुरूष मनै हुइल त हम्र कुछु फै नै कर सेक्थी रूपियाँ–पैसा नै चिन्क। कालसे आपन बाबुह फे लैजाइस

आपन सँग स्कूल पढाए। त्वार बाबु फे चिन्ह सेकी।

छावा, आजकाल बाजम् फे ब्वालत हमार दङघा बोलीम न थुन्यार से? जनानी बोली बातीस जनानी त नै हो? ऊ फे त पढल हुई?

दिनेश– बिता पढ्ल काहाँ बाजम् ब्वाल सेकी त। जनानी त हुइती। पढल बाती तब ब्वाल सेक्थी लिख सेक्थी, हमार जातीक लवण्डी त हुइती। किरण बाबुक सँगक एक्क नास हुइही दुनु बान।

जगमोहनी– ओहो! छावा, पहिल थाहाँ रहत कि छाईन फे पढल से छावन अस हुई सेक्थ कना बात त त्वार किरण बाबुह फे पढैने रलही। रूप्या–पैसा चिन्ह स्याकत बाजम् बोलुइया बाबुक नेन्ह ब्वाल स्याकत, सूई लगाए अउईया बाबुक नेन्ह सूई लगैनाम काम पैने रह। बि... चा... री... किरण.....।

:साँसदजी हुक्क:

–सागर चौधरी
बबई बहुमुखी क्याम्पस गुलरिया, बर्दिया
आई. ए. दोश्रो बर्ष

विभिन्न पार्टीसे उम्मेदवार जब अप्न हुक्क बनल रहि,
खाली आपन क्षेत्र व जनतमके विकास कर्बु कहि,
तर अब अप्न हुक्क हमार देशके साँसद बन्ली,
देश ह चलुइया ड्राईभर बनल बाटी।
यिह ओंरसे त देशके प्रत्येक नागरिक फे,
अर्थात विभिन्न जात जाती समग्र नेपाल देशके,
समस्या संसदम लैजाक छलफल बिचार विर्मश कराक,
समाधानके घोटैल डगर निर्कथ साँसदन।

× × × × × ×

थारू भाषा ग्वार केल नाही समस्त थारू जाति ब,
संसदमका १४। १५ थो थासु साँसदनके मातृभाषा हो,
हमार भाषा साहित्य कला संस्कृती,
मैगर रलसेके संरक्षण व प्रकाशनम बहुत बा कमी।
एक रूपता नै हो भाषाम फरक बा ठाँउ ठाँउले,
थारू फे बस्त हुक्क फुटल बाटी पार्टीके विभिन्न नाउले।

× × × × × ×

काफी बाटी साँसदजी हुक्क थारूने आवाज उठाइक लाग,
तफे संसद बञ्चित रहत हमार भाषा सांस्कृतीक उत्थान करक लाग।
थारू हुईती अप्ने हुक्कनक दादुभाई भोट देव हमन कही;
जित्क गैली विभिन्न पार्टी से एक्क पार्टी से नही।

जौन जसिन पार्टी के रलसेफं हुई अप्नु हुंक थारू,
सोंच दि हमार साहित्य विकासके लाग पार्टीहँ लात मारू ।
तर अप्न हुक पार्टी पार्टीके नेता बनकन,
पुर्वाग्रह धरथी आपन छोरक और जहन ।
थारू आपन अप्नेह विकासके लाग एक हुई पर्ना कैक,
भाषण कर्थी लेकिन फुटल रथी स्वंय अप्नेह ।

× × × × × ×

हो, अप्ने हुक्नके सिद्धान्त डगर फरक हुई,
राजनैतिक लडाई फन भारिनक हुई,
तर हाल अप्नहुक्र उ लडाई,
सरकनके बुक्री भारा खयाल बेरिक लडाई समझक,
हमार भाषा साहित्य कला संस्कृतिक उत्थानके लाग हुई एक ।

+ × × × × ×

अप्ने हुक्नसे कुछ बात पुछना लागत,
पुछलक प्रश्नक उत्तर सजिलोसे आइना अस लागत,
तभुन पुछतु,
अप्ने हुक्र कँहुयासे हमार उत्थानकँ लाग,
आवाज उठइवी भाषा संस्कृति कला साहित्यके लाग,
थारू भाषाम एक रूपता आई कबु ?
समाचार अइना थारू भाषम बोल्थ मनै कहाँक ?
सबसे धेर थारू जौन भाषाम (चिरबिर)[१] कर्थ,
सबसे धेर साहित्य कला संस्कृती जसिन थारू भाषाम आग बा;
बस उ थारू भाषाम समाचार नै आइना कारण का बा ?

धन्यवाद !

–०–

गीत

-भगोरिया गोचाली
बदिया, मेरैया

उठो युवा हो तैंल आब हों, मिर्मिरे बिहानी ।
मिर्मिरे बिहानी मन पैला आग सारी ॥
मिर्मिरे बिहानीमन हों, पैला सर्ना बनाई हमार बानी ।
आग पैला सार्के हम्र फटिक अजरार लानी ॥
बिहानीके लाली धाम हों, अम अजरार देक ।
हमार समाज बनाई परल अन्धकार मेटका॥
हिमाल जसीन शीर तुहार हों, चट्टान जसीन छाती ।
असिन तागत रति–रति काकर पाछ बाती ॥
उत्तरमा हिमाल पहाड हों, दक्षिणमा तराई ।
उठो युवा सक्कु जान हमार समाज बनाई ॥
असत्य व अन्धकार हों, कुरितीह छोडके ।
सुन्दर समाज बनाई परल युवा आग बढके ॥
गाउँ घरके सक्कु युवा हों, एकताप जुटो ।
आपन हक अधिकारके लाग युवा उठो ॥
सक्कु युवा जुट्के हम्र हों, संगठन बनाई ।
आपन हक लिहक लाग संघर्ष जाई ॥
जार मुमु काममकर्थौं हों, पुस माघक ठण्डीमा ।
आँग नुकाई परथ हमन फाटल गन्डीमा ॥
दिनभर काम कर्थौं हों, पसिना चुहैनो ।
फाटल गुन्द्रा पनिहा मारले जिन्दगी बितैबो ॥
शोषक जिम्दार बैठल रना हों, हम्र काम कर्ना ।
हमार रगत पसिनम जिम्दरुवा मस्ती मरना ॥
वर्षभिर खेती कर्थौं हों, हाथ खगरा सरैबो ।
अन्न बाली तयार हुइथा जिम्दरुवा घर भरैबो ॥
कब्बो वर्षा कब्बो सुक्खा हों, पति त रहना ।
ब्याकर मारम पर्के हम्र गरीब भुँख मुअना ॥

खेल–ऐलो गोचाली बैठो लपकीके आपन भाषा साहित्यम कसी दरहो जोर।
गाउँ घरके सक्कु जान हाँ, कर परल रायी।
शोषकनके असिन जाल चिकन फँकाई ॥
शोषकनके असिन जाल हाँ, चिरकन फँकैबी।
गरीब दुःखी जनता हम्र सक्कु सुख पैबी ॥
शोषकनके हम्र जनता हाँ, नँ मन्ना हो डर।
शोषक मास्के सुख पैबी हम्र जीवन भर ॥

गीत

"हमार समाज"

–श्रीमती जगमोहनी चौधरी
सेमरहवा, बर्दिया

पुरान समाज छुटैना मुस्किल
लौव समाज लेकन पढ़ना
समाज सुधारना, गाउँ गाउँ जाकन
विकास सिखैना

लौव समाज लेकन पढ़ना
विकासक ज्योति अजार परना
सुनो दिदी बाबु, विकासक लहर
आग पढैना

सक्कु जान पढ़कन आग जैना
नारी जाती काकर पिछरल रना
दासी बन्क, रातदिन सुखक सद्द
प्याती बनकन

बजार मन भोडका वियर चल्ती
गाउँक किसानके खाली बा खल्ती
गैरी खेतम किसान दादु हर जोत्थ
भुख्ल प्याटीम

नारी जाती काकर दासी
सुखक सद्द काकर प्यसी
समाज सुधारो नारी जातीन
हक फे दिलाव।

:उठो गोचाली:

पतिराम चारु
धधवार गा. वि. स. वार्ड नं० ४
बैदी, बर्दिया

उठो गोचाली हमन बहुत कुछ कर्नां बा,
हम्र हमार समाज किहिन और समाज के आघ चिनैना बा,
याकर साथ-साथम हम्र हमार भाषा किहिन फे आघ बढैना बा,
उठो गोचाली ... ... ॥१॥

उह मार2
हमार बुदु (बुबा) कहँत उठो नाती बिहान हुइल काम कर्नां बा,
तो मै कहुँ नाही बुदु (बुबा) हमार जसिन युवा मनैने शिक्षा लेना बहुत जरुरी बा,
शिक्षा लेक हमार समाजम रहल कमी कमजोरी फे हटैना बा,
उह मार मै कथुँ शिक्षा लेना बहुत जरुरी बा,
उठो गोचाली ... ... ॥२॥

उह मार2
ऊ युवा किहिन देखके महिन रीस लागथ जे आपन भाषा बिस्रा बारथ,
आपन भाषा बिस्राके और भाषा बोलना मनैनके चाकरी,
चाप्लुसी व चम्चाखोरी बन जैथ,
उठो गोचाली ... ... ॥३॥

उह मार2
मै कथुं हम्र हमार भाषा, साहित्य संस्कृति किहिन
बँचाई कहना मोर सक्कु गोचालीन से आह्वान बा,
अन्तमा बिदा लिहतुं सक्कु गोचालीन से मोर राम–राम बा,
उठो गोचाली ... ... ॥४॥

"अधकचरा प्रेम"

–राम गुलाम चौधरी

मगरागाडी गा. वि. स. वडा नं० १

मगरागाडी, बर्दिया

दुई जनहनके भेट हुइल आज केवल चार दिन हुइता। एक आपसमा ओई अतना खुशी रहैं कि ओइन कुछ आपन किहिन पत्ता नाई रहिन। प्रकृतिके देन दुई (२) दिन भेट हुइता, कबो नाई हुइना, कबो–कबो पहिलेक चार दिनके बाद याद ऐथिन तो ओई अपने अपने मा खुब लभाई हुरा करथैं, ऊ हसके सफर एक तो शुरू–शुरू मा भेट हुइल शुरूमा बोलचाल ऊ आँखिक इशारा ओइन के कतना मजा सफर रहिन। आज तक ओइनके प्यार अतना आगे मन पढ गैल रेहैं कि ओई अब कब्बो नाई बिछोड हुईना चाहैं। बिछोड फन कैसिक हुइना मन लगहिन जबानिक पहिलेक शुरूवात एकता शुरू–शुरूमा प्यार।

वास्तवमा ओरिया फेन बडा मजासे मिलल रहिन कि दुनु जाने खुब बरिया (सुग्घर) बिजरी, खुब जवान रेहैं लवरिया प्यारी। प्यारीक अनुहार (चेहरा) देखके तो और मनै फेन खुब नाउँ लेहैं। ओ कहैं कि "ऐसिन सुरत तु कहाँ से पैलो? सच–सच बताव तु कहाँसे ऐलो? और आँखिसे स्वागत फेन करैं। नाई करही तो फेन कैसिक ओतना सुग्घर छिलगे, उमेरके लगभग १८।२० वर्षके जवान और भुरी (कपार) मनिक बडे लम्बा–लम्बा भुल्ला (केश) ओ गुलाबी ओठ और कंगील गाल (स्यावहस) देह फेन खुब गोहुँवा रंगके रेहें। सुग्घुर मा किहिनो से कम नाई रेहे।

ओहोर रवि कहना लौवण्डा फेन किहिनो से कम नाई रेहे। ऊ करिया (सावंर) मा फेन खुब सुग्धुर आकर्षित चेहरा (अनुहार) मोछ भरखर आईतिहिस, देखना बल्तामा लगभग २२–२३ वर्षके रेहे उहो देखनामा किहिनो से कम नाई रेहैं।

लवरीयन घेर का पढैबों सुकुबार हुई जैथैं ओ एक्तो दोसर घर जैना जात होई भतना खर्च कैके पढाव सिखाव दोसर घर चल जैहीं तहुन, सोचके प्यारीक बाबा कक्षा ८ आठ मसे प्यारी किहिन पढेक छोडा दिहले रहथ।

प्यारी लवरिव आपन भेवक (भाई) सँगे दाङसे सुर्खेत मामक घर पहुंगी खाए आइल रहे। ओर रवि फेन एस. एल. सी. (S. L. C.) पास कैके घरके स्थिति और बाबक कारणसे क्याम्पस लग (ओर) नाई जवाई हुइथिस और घर गृहस्थी चलैना कौनो नोकरी (जागिर) के चक्करम रहथ। रबि कैलाली से दाङ सुर्खेत आपन संघरियनसे भेटघाट करे जाय, कबो वस्ते घुम फिर करे फेन जाय। साँझके लगभग चार (४) बजेक समय (टाईम) सुर्खेतके बुलबुले ताल कहना पार्कमा लवरिया प्यारी और लौवण्डा रवि भेट हहुइथैं। प्यारी गोरा पसारके बैठल रहथ ओ रवि आपन मुरी (कपार) प्यारीक कनिया (क्वारा) मा धैले रहथ। प्यारी आपन मुरीक (कपारिक) बडे–बडे भुल्ला से रविक आधा मुह (चेहरा) छोपले रहथ। रवि हाँ अब हमरन के जैना समय (टाइम) हुइगिल, फेन भेट होब कि नाई ? का करेक नाई भेट होब। हमरे तु मै एकदम सच्चा प्यार कैले बाटी और पवित्र प्रेम करना मनैनके हमेशा जीत रहथ।

प्यारी हमरे नाई बढिया काम तो नाईं कैले हुई। जस्ते कथैं कि "लाभ ईज गुड" (Love is Good)। प्यारी फेनो भगबानके रूप हो। प्यारी आब मै ईहाँसे जैम तो चिठ्ठी पत्र पठैबो कि नाई ? कैसिन बात करतो तु रवि तु खाली चिट्ठीक बात करतो हाँ एकथो बात याद आइल। तु उपरे उपरे उरो मै तरे से हेंरबु। तु साथ देबो यो सँगे जीयब ओ सँगे मरब।"

दुनु जाने एक आपसम (चपट) लिपट जैथैं। कुछ बेर ऊ दुनु प्यार रूपी दुनियाम हेराई जैथैं। कुछ पाछे दुनु जनहनके होस अईथिन। घडी हेंरथैं घडीमा सात (७) बजल रहथ। बुल बुले ताल पार्कमा मनै कहना दुई जाने केल रहैं। दुनु जाने जडी हेरा हेंर करथैं। फेन दुनु जाने हँस्थैं ओ लाज माने हस करथैं। प्यारी मुह छोपके हाँसे लागथ। "का करेक हाँसतो प्यारी महिन कैसिन देखती।" तोहार

मुहेंम मने गालेम मोर लिपष्टीक से सब लाल–लाल हुईगैल बा कहती प्यारी आपन रूमाल निकालके पोंछ दिहथैं। लाज दुनु जनहनके बिछोड हुइना दिन रेहें। रवि आज कैलाली आइत रहै; रबि किहिन पठाए प्यारी बस स्टेशन (पार्क) थन (सम) आइल रहैं एक चोत प्यारीक आँखीमरे आँस आईगिल और प्यारी धिरे–धिरे रोईलग्नै। हमरन के प्यार हमेशाके लिए अटुट रही। प्यारी चिट्ठी पत्र पठना कबो नाई भुल हो। तोहार यादसे महिन हमेशा सतैती रही। और प्यारी धिरे–धिरे रोइती रविसे हाथ मिलाए गइ नै ऊ अन्यिम बिदा लिहत रहैं साइत। एक घची परसे बस स्टाट हुइगैल। रवि हद बदौवा आपन अँगुठी निकारके प्यारीक हाँथिम (अंगुरम) धला दिहथ और रवि बसमा जाके बैंठ जैथैं ओ बस चले लागथ। प्यारी ओठ नै ठह्रियाइल हेरती रहैं। एक घची परमे बस नाई बिलगाई लागल। दाङमा प्यारी किहिन रविक याद से सताई लागथ। यहेंर फेन प्यारीक यादसे रविक हालत खराब हुईतिहिस। रवि कोन्टीम (पठरिम) सुतके (ओदरके) प्यारीक बारेम सोंचत रहैं कि हुलकिया (पोष्ट मेन) रवि कहिके गोहराइल, रवि मौका (ड्याल) डगर हेंरल हुलकिया चिट्ठी (सन्देश) देहल। रवि हदबदौवा चिट्ठीक उपर हेरथैं। नाई बुझना मेरके अक्षरमा "प्यारी" कहिके लिखल रहथ। उ हदबदौवा चिट्ठी पढे लगथैं।

"प्रिय रवि अटुट प्यार !!"

रवि हमरनके दुनियाँता तुफान आईगिल। हमरनके पवित्र प्यार, माया सब धोखा हुई लागल रवि मोर भोज यीहैं फाजुन महिनक एक १ गते हुईना बा रवि मै बाबक कारणसे मजबुर बाटुँ। मैं तुहाँर ओ आपन बारेम सब बात बाबा किहिन वतैनु लेकिभ बाबा नाई मानल। रवि अगर (यदि) तु महिनसे सच्चा प्यार कर थुइबो तो यिहें फागुनके एक १ गते सेपहिले आके महिन ईहांसे लैजाव मै तुहाँर सहारामा बैंठम।

उहे तोहाँर "प्यारी"

जब रबि चिट्ठी पढल तो रविक देह (शरीर) मा तुफान आईलहस लगलिस, रवि तुरून्ते (हालहाल) झोलामा कपडा सामांन तयार कैके एक हाँथेम झोला (ब्याग) लैके बससे कोहलपुर आइगिल दोसर दिन दाङ पुगगिल, दिनके खुब दुपहर रेहे। लगभग १२, १

बजत रेहें। रवि प्यारिक घर आइगिल रेहे। प्यारीक घरेम भोजेक कारणसे तमाम पहुना–पछार रहैं ब खुब चहल पहल रेहे। ऊ चहल–पहल जब रवि देखल तों उहिन बडा रिस लगलिस उ दोसर बात सोंचे लागल।

फेन से एक घची रहिके उ एकठो मनैया से पुछल– प्यारी बाटैं कि नाईं, कहाँ बाटैं ? ऊ मनैया रवि किहिन खुब निहार से हेरल गोरा लैके मुरीतक लेकिन बता देहल कि बावई निका घरमा कोन्टीम .. ...। रवि किहिन का पता कि मैं जिहिन से पुछनु ऊ प्यारीक बाबा होबै। रवि हालहाँल घरेम पेल्नै फेर कोन्टीम हेंरनै लेकिन कोन्टीम कोई नाई रेहे। रवि यहेंर–ओहर हेंरे लग्नै लेकिन प्यारी नाई बिलगैनै। सिरिफ पहुना-पाछर बिलगै। एक घची परसे हल्ला हुई लागल कि दुलही लवरीया "प्यारी" कोटीम नाई होवें। वातावरण सुनसान (उदास) हुईगिल। लगभग एक दुई घण्टा हु गिल लेकिन प्यारिक पत्ता नाई लागथो। अचानक एकथो बच्चा कहे लागल कि माया ! माया !! प्यारी दिदी बनवा लग (और) जाइत रेहें। जौंन प्यारीक घरेक पश्चिम मा बनवा परे।

जब अतना ऊ बच्चा कहल तो सक्कु जाने ओहरी दौरे लगनै। जब बनवामा पुग्नै तो सक्कु जनहनके जीउ ढव से कंक रहिगिल। प्यारी आपन धैंचम अधरान (ओखरी) बाँधके एकथो रूखवम झुलत [तगल] रेहे। ओंहर रवि पागल हस हुईगिल रेहै। उ सब लंगा अन्धार देखे लागाल। रवि दोसरी जब बनवम पुगल तो ओकर नजर एक कागजमा परल जौन प्यारीक हाँथेम रेहें। उ हालहाल पढे लागल।

"रवि" आई लव यू !!

मैं तुहिन से सच्चा प्यार कैले रहुं। लेकिन ईहे प्यार हमार दुनु जनहनके बिच एक लौहके जंजीर बनके रहिगिल .. ...।

रवि मोर अन्तिम कहना ईहें बा कि तु महिन हमेशाके लिए भुल जैहो और तु आपन जीन्दगीम फूला बरसैहो खुशी से भरहो। आब महिनसे कबो मिलना [भेटना] प्रयास [कोशीस] नाई करहो। अगर प्रयास करबो तबो पर तु महिन नाई भेटैबो। मैं आब तुहिनसे कबो नाई भेट हुई सेकम का करेक कि मैं एकदम लम्बा सफरमा

जाइतु, रवि अगर तु महिनसे सच्चा प्यार कैले रहो कहले से महिन से जो गल्ती हुइल उ मैं तुहिन से माफी माँगतु, हुई सेकीती माफी कै देहो ।

उहे तुहार दुःखी "प्यारी"

चिठ्ठी [सन्देश] पढके सेक्के रवि एक चोत बहुत जोर से चिल्लाइल– 'प्यारी' …… कहिके मैं आईगैंनु प्यारी, हेरो ना मैं रवि तोहार रवि मैं तुहिन लेहे आइल बातुँ एक चोट आँखी खोलो ना प्यारी हेरो तोहार पागे के आईल बा तोहार प्यार तोहार सहारा तु आईसिन का कै धरलो प्यारी मोंर पर भरोसा [विश्वास] नाई रेहें तु मोर प्यार किहिन खुब बढिया तोफा देहलो कहती रवि रोई लागल हु… … हु… … हु… … प्यारी हु … …हु … … हु .. … हु… … हा S S … … प्यार से महिन से खुब बढिया दोस्ती निभइलो … … S S … … S S S S … … महिन अकेली का करेक छोर देहलो … … S S … … S S… … प्यारी … … लेकिन चिन्ता नाई करहो महुँ आइतुँ जहाँ बाटो उहाँ आब मैं केकर सहारा से जीउँ । का मैं अकेली जिन्दगी बिताउँ ? तु महिन माफ कै देहो कहती– रवि प्यारी किहिन आपन दुने हाथ से खुब जोर से पकर के समोध लेहल और खुब रोइल, कुछ घची रहिके आवाज [बोल] फेन कम हुइती गैलिस और रोइत–रोइत आँखी फेन लाल–लाल होके सुबा गैलिस । एक घचीमा आवाज [बोल] फेन बन्द हुई गैलिस । तब मनैंमके भीरमसे दुई चार जाने आगे बढके प्यारी और रवि किहिन अलग कराई खोज्नै । लेकिन अलग नाइ होके दुनु जाने एक लंग धरक [लरक] गैनै ऊ दुनु यी दुनिया किहिन हमेशाके लिए छोडके चल गैनै । पहिले चाहिं दुनु जाने जवानिक प्यारमा हेंराइल रहैं, लेकिन आब दुनु जाने हमेशा के लिए हेराइं गैनै ।

अस्तु !

१६ थो मुक्तक

–कृष्ण राज चौधरी 'सर्वहारी'
देउखुरी, छुट्की घुम्ना
चैंलाही गा. वि. स. – ६, दाङ

'हम्रे थारु'

हम्रे ते हुइ थारू
रोज पिथी दारू,
इहे हो हमार
सब्से भारी शिंगारु ।

।१।

'मोर जनेवा'

मोर जनेवा महां मजासे बतुगाईथ,
बात ते नै बुझ् जाइथ, हेंवर भर पुरनुनुवाईथ
तिना नै भेटाके पिठा फरकुवाईथ ।

।२।

'मोर छावा'

कहल मोर छावा,
नान् दे बाबा झुलुवा लावा,
मैं कलुँ पड्लाबा, अभिन ब्याज ओ सावां,
कहाँ से नानु झुलुवा लावा ?

।३।

'मोर बाबा'

निस्ते मे ते कहथ छावा रे !
पिपथ ते सारक गद्हा,
लेकिन अप्नेहे बा महां मद्हा ।

।४।

'मोर गुरू'

दाई–बाबा करथां, लड्कनके आश,

मोर गुरु कथाँ, दारू ओ शिकार खवाऊ,
तुहिन् मजा से कै देम् पास,
गुरुक् बात सुन्के मोर उठथ हाँस ।

।५। 'मोर दादु'

मोर दादु बावै महाँ बवाली ,
तब्बे ते बाबा बनैले तिस् झराली ,
काम ते मज्जे से करथ ,
लेकिन बतुवाईथ महाँ फटाही ।

'आजकलिक् लवन्डिन' ।६।

उमेरमें चहा जतना भारी रहित,
आपन हे मन्थाँ छुट्
गाँउ शहरमें चहा जतना बतुवाईत,
छोट रथिन् मुट्
केउ साली कहिन् चहा ना कहिन्,
सबहुन कथाँ भातु ।

।७। 'आजकलिक् लड्का'

पढ्–ओढक कहाँ गैलिन ,
मार-मार खइही मचकी ,
काम करे पठइहन् ते ,
खेले जैंही घुच्ची ।
कापी लेहक पैसा मंग्ही हेर दरही फिलिम,
फीस बुझैना पैसा फेन दुई दिनमें चिलिम् ।

'मोर कमैया' ।८।

मोर कमैया पेहथ लगौंटी ,
घर बिल्वा मारल ढारके जग्गा बरौटी,

आपन दुःख बतुवाईथ खोब परटैटी,
आजकल ते मच्छी खाईथ, खोब मस्टैटी,
तब्बे ते पकड्ले बतिस मन्के छेरौटी ।

।९। 'मोर भईवा'

पश्चिमी सभ्यतामें रंगमगइलक् मोर भइवा
बावै महाँ छैलाहा,
झलुवा पैन्ट महाँ घोघलार घालथ,
ऊ फेन रथिस् मैलाहा
कहथ - भोज उही से करम ,
जे आपन छाई हे दी, धैर दैजहा ।

'मोर बुद्दु' ।१०।

दुई बरस पहिले, मोर बुद्दु रहे ककन्दार,
ईही से पहिले, रहे खरिदार ,
भुरा ते पाक् रखिलस् ,
लेकिन् लगाईथ तेल मँहकनीदार ।

।११। 'मोर बुदी'

मोर बुदी बावै महाँ सूम्
थन्चे बातेमें रहथ गाम-गुम्
नाँउ ते [illegible]ली बतिस् ,
लेकिन, बावै महाँ ठूल ।

'मोर बहिनियाँ' ।१२।

मोर बहिनियाँ ते महाँ करिया बा,
लेकिन नाउँ बतिस् गोहरकी
भुल्ला ते थन्चे बतिस्
लेकिन खोजथ बडा भारी झोंटी ,

अभिन् ते छोटे बा तौ पेहक तन रहथ धोती,
बोल्ना ते मज्जे से बोलथ,
लेकिन सक्कु जने कथिस् लाजी।

।१३।

'मोर भौजी'

मोर भौजी वती महाँ खर-खर
लेकिन नेंग्थी लरखर - लरखर
छोटेमें पढ्ना नै कैली तरखर
छाई - छावा हु रखिलन,
ककहरा पढ्थी आब् भरखर।

'मोर छाई'

।१४।

दुई बरसके मोर छाईक् नाउँ बतिस सेती
जंघिया कूल नै घालथ, लेकिन बाँधथ पेटी
गालेमें बतिस् तिल्हा, पुछथ बाबा यौ करिया कहिया मेटी ?

।१५।

'मैं'

मोर नाउँ ते हो 'सर्वहारी'
दुई कत्था जग्गा बा,
लेकिन लागथ महीं बड्वारी
संघरियन् कथाँ चोलो जाई जाँड पिए,
आ राखल देवारी
पाछे से जहानके आवाज आईथ,
कहाँ हुईता हजुरके सवारी।

।१६।

"नेपाली महिला असिक बाँचत"

—भगवती चौधरी

बर्दिया

नेपाली महिला हुँक साह्रै नै दयनीय जीवन बितैती बात। सामान्य अक्षर चिन्ना मौका समेत नै पैल इहत। ९३ लाख महिला हुक मध्ये ८५ लाख त निरक्षर (पढ लिख नै जन्ना) सब किसिमसे शोषित व पिडित बात। भारतके भरम बँचती रहलक हुँक अतरा ज्यादा श्रम कैक अतरा कम प्रतिष्ठा पाइल रहुइया हुँक। छाई जन्मल कैक खिन्न इहना परम्परा हमार समाजमा आश्रित विद्यमान बा। यी नेपाल देश गाउँ-गाउँते भरल बा ओ आज सम्म फेन हमार देशके कतिपय गाउँमा, जिल्लामा मोटर पुग स्याकल नै हो। यीह कारण नौलो (लौंव) परिवर्तन ओं चेतना के लहर गाउँमा शोतरा बहिया से पुग नै स्याकल हो। शोषण गरीबी ओ अशिक्षा केल हमार नेपाली पेवा हुइल बा, उद्योग व्यवसायके विकास नै हुई स्याकल हो। ज्याकर कारण लगभग ९४% (प्रतिशत) जतना कृषिमा संलग्न बात ओ नगन्य (थोर थार) मनै मात्र उद्योग व्यापार कर्थ शिक्षित मनै बहुतसे बेरोजगार बाट ओ महिला बेरोजगार संख्या बहुत बात। दुःख कष्ट ओ मेहनत कैके अनेकौं हण्डर खाके पढल ज्ञान हुन लगानी कर्ना लगर नै हो। कुछ कर्ना शिप, जाँगर और कौसला होक फेन देश हुन यी सबके आवश्यकता हुइती हुइती फेन यी व्यक्ति काम नै पाके बेरोजगार स्थितिमा बाट का करबी देशके सब श्रोत ओं साधन मुट्ठीभर शोषक हुक्नके कब्जामा बात। उत्पादन क्षेत्रम लगैना सम्पत्ति विदेशी बैंकमा जम्मा करल बा। बहुत से नेपाली जनता हुँक अर्ध बेरोजगार के स्थितिमा बाट ओ बहुतसे नेपाली ओस्तहें जसिन श्रम कर्ना बाध्य बात ओ प्याट भर खैना फे धौ-धौं बात। उह ओरसे नेपालके शहरम भारतके छोट-बर शहरम भान्से (भात पकुईया) सुसारे, कुल्ली, शिपाही ओ भाँडा मिस्ना कम्म कैके बैठल नेपाली हुँक बहुत बाट। अशिक्षाके कारण से महिला के चेतना साह्रै सिमित (थोर) बा। महिला हुँक यी सब काकर

हुइता बुझ समेत नै सेक्ल हुइत। बस केवल भाग्यहन दोष देक चुप चाप हौक बैठ देथ। ओ अप्न हुन धिक्कार देथ। उह ओर्से त यी देश असिक पिछरल बा संसारके सब से गरीब देशम एकथो देश नेपाल फेन हो। अशिक्षा ओ गरीबीके कारणसे नेपाली महिलनके संसार साह्रै सिमित बा। साँझ बिहान के छाक टर्ना, आपन लाला–बालाके भुखाईल पेट भर्ना समस्या मा अल्झल नेपाली महिला हुकनके ज्ञान ओ चाहना फेन बहुत थोर (सिमित) बा। उह उपर फे छोटी उमेर मा हुइना भोज (विवाह) ओ बाल बच्चा ओ पारिवारिक बोझ से हुइलक आर्से यीहँर–उहँर कर्ना ओ सोच्ना फुर्सद सम्म फेन नेपाली महिला हुकन नै हो। यी समस्या से मुक्त रहल जिन्दगी के कौनो स्वच्छ ओ सुन्दर उत्पादक स्वरूप फेन हुइथा कैक कल्पना सम्म फेन कर सेक्ना आजके महिलाके स्थियि नै हुइन।

ग्रामीण परिवार के कतिपय पुरूष हुँक्र लाहुर गैल रथ ओ यी लाहुरे हुकनके श्रीमती (जन्नी) हुकनके जीवन और दुःख दायी रथिन। हीकनके दान–दान (थोरथार) रहल सम्पत्ति साहु खैंथिन। ऋण बढ्ती जाइथ, समस्या उपर समस्या थप जाइथ, बाल बच्चा नङ्गा–भोका हुइथ ओ यी महिला हुकन गाउंके वाली फटाहा से आपन सतित्व रक्षा कर्ना फेन ओतहे कठिन हुइथ। आज सम्म डाक्टरी दवाई कलक नै देख्ना नेपाली महिला हुँक्र फेन बहुत बाट। अकालमा मृत्यु के खोल्टीम पर्ना बाध्यता बा। दवाई खाए नै पाके आपन छावा–छाई हुकन बचना आधार नै पाके आज धयाधय खतम हुइलक चुप–चाप हेर्ना बाध्य बातिन नेपाली महिला हुकन। जसिन सुकै पिडा ओ वेदना हुइलसे फे गुनासो कर्ना भर पर्ना, कौनो न्यायीक सँस्था नै हुइन हुकनके लाग। बलगर कमजोर हुन ज्या कर्लसे फे हुइथ। कानून फे ओक्रहे पेवा हुइती बा।

नेपाली समाजम महिला हुकन सम्पत्ति जसिन सम्झथ ओ परिवारमा फेन महिला के सेवा हुन अथाह त्याग ओ बलिदान हुन कौनो महत्व नै देजाइथ। मानौ महिला कलक शोषणके भागीदार हुंइत। मैंया करल जसिन परिवारके पुरूष हुँक्र महिला हुकन सही अर्थमा दाशीके दर्जामा मात्र (केल) धरल बाट। पति (थरूवा) ओस्तेहें घुम्ना

ओ छाडा होके नेगल से फे परिश्रमी ओ घरके सम्पूर्ण कार्य कर्ना पत्नी पतिके नियन्त्रणमा बैठ पर्थिन।

महिला हुक्र तन मन सब चिजके सम्पूर्ण रूपसे सिङ्गै जीवन सेवामा समर्पण कर्थ पतिहन परमेश्वर के दर्जामा धर पर्ना बाध्यता लादल बा नेपाली महिला उपर तर यी सम्पूर्ण और सेवाके नियम कौनो हालतमा फेन माया के प्रतिरूप नै हो। महिलाहन आदर ओ स्नेह (माया) कर्ना वर्गके देन नै हो। बल्की समाजके सामन्ती हुँक्रनके बनाईल पुरान जाली नाटक मात्र हो। यी बात बुझ्ना महिला हुँक्र बुझ पर्ना नितान्त आवश्यक बा। दाई (आमा मनै हुइल महिलाके भावना ओ हृदय, सोचाईके परिधि ओ कार्य क्षेत्र व्यापक एवं विशाल बा। सहनशीलता ओ ममता के आधार फे महिलामे बा। यीह कारणसे नेपाल के अजरार बिहानी फेन महिलाके छाती भितरसे जगना जरूरी बा। हरेक बदरीम चाँदीके कुछ अंश रहथ। रात जसिन सुकै अंधार ओ डर लग्ना जसिन हुइलसे फेन बिहान ओ बिहानके किरणसे गाँसल रहथ। महिला हुक्र असह्य पिडा सहल बात, अन्याय ओ अन्यायके चकिया (जाँतो) मा पिल्सल बात। गाउँ घरके महिला केल (मात्र) नै होके शहर बजारके महिला हुक्र समेत शोषित बात। कौनो कार्यालय मा हुइल रहुवा ओ पुरस्कार के क्रममा महिला हुकन मौका नै देके पुरूष हुकन उह हिटलरी तानाशाही जगजगी चलैती आइल बात। महिला हुक्र अनगिन्ती विपरीत (उल्टा) परिस्थिति के माझन बाँच परल बाटीन। तर यी परिस्थिति दद्द नै रहुईया हो, यी बात सत्य हो।

महिला हुँक्र क्रमश सचेत हुइती बात। महिलाके वेदना असह्य हो स्याकल बा। चेतनशील मनै के लाग अन्याय दहना साह्रै पिडाजनक रहथ। यी पिडा महिला हुक्र पाइला–पाइला मा भोक्ती आइल बात तर आब न्याय खोज्ती बात। अप्नहें जागरूक होके आपन सुखके संसार अप्नहे बनुईया बात। याकर न्याय के लाग हक, हित ओ अधिकार के लाग संगठन गठन हुइती बात। संगठीत होके संघर्ष कर्ना क्रम शुरू हुइती बा। यी महिलाके लाग बिहानी प्रभात जसिन आशाके बात हो। आपन आधारमा अप्नेह मुस्कान उब्जउईया बात हो।

हुइनात आजके जनताके सरकार महिलाके अधिकार ओ हित संरक्षण मा पुरा–पुरा ध्यान दिह पर्ना हो। तर फेन आस्ता ओ विश्वास करल सरकार जिम्मेवार ओं व्यक्तिके दामु बलत्कार के शिकार हुइलक महिला हुक्र दुःख बोकके जउईया महिला हुक्र फेशन लगाके पुरुष हुकन लोभ्याइथ ओ बलत्कार के शिकार हुइथ कना आरोप लगैथ। उह कारण महिला हुक्र सामान्य होके नै नेङ्गके संगठित होके न्याग परल। नम्मा नम्मा नङ्ग (नु) पाल्के बलात्कारी हुकन चिठ परल ओ मिर्चा (पिपर) के धुर बलात्कारी हुकनके आँखिम छिट परल कना सुझाव दिह खोज्लक हो। यी सब जिम्मेवारी पन्छइना कौनो दोसर नीति हुई त? का असिन मनो वृत्तीले वास्तविक रूपना केक्रो फेन भलो हुई सेकी? का असिन कुकृत्य हन आमुल रूपमा नष्ट कर नै सेक जाई? असिक बाँचत नेपाली महिला हुँक्र। हुकनके उपर पिडा उपर पिडा देना काम कर्थ जिम्मेवार निकाय के व्यक्ति हुँक्र। आब के महिला अप्नेह जागृत (जगना) नै हुइना त?

अस्तु!

लपेंटा गीत

–धन बहादुर चौधरी
महम्मदपुर गा. वि. स. वार्ड नं० ६
दूधा, बर्दिया

सुन लेब भाई सुनलेब बन्धु मोर एक पुकार सुनो,
ऐसा काम करो जीवनमा जेहमा हो कल्याण सुनो।
हाथ जोरको बिन्ती करतुँ चतुर ओ अज्ञान सुनो,
जगके लिला बहुत बा लेकिन जौन कहतुँ तौंन सुनो।
सत्ययुग, द्वापर, त्रेताके बितल कल युगके बयान सुनो,
सत्ययुग द्वापर त्रेताके बीतल आज बनल पुराण सुनो।
ऐसे भी कलयुगके लिला आगे बनी पुराण सुनो,
सुखके बात कभी नसुनो जब सुनो परेशान सुनो।
आजके मानव थी जीवनमा कैसे करथ व्यवहार सुनो,
कैसेक बीयथ समय सभीके कैसे जीवन गुजार सुनो।
खेती पाती काम धाम छोडके करथैं सब व्यापार सुनो,
एक मनपर कोइन चलै सबके आपन बिचार सुनो।
धर्मके लीला कभी न देखबो हरदम चोर चपार सुनो,
दिल जोडके बात न सुनो मार करेक तयार सुनो।
भेंट मिलनके बात न सुन्बो हरदम मार कटार सुनो,
मुहसे भारी यार बनैथै मनमा ताक तिवान सुनो।
चोरी कर्ना झुँठ बोल्ना यही हो सबके ध्यान सुनो,
धर्म के नामपर पाँव न दारै कलयुगके बरदान सुनो।

"वीरताके निशान देखा देव"

-के. आर. टी.
कर्मला, बर्दिया

उठो हमार बाबु भैया गाउँ घरके किसान कमैया
एकथो काम कर पर्ना बा,
खुन चुसुइया शोषकन से मानव रूपी दानवन से
एक दिन त लड पर्ना बा,

रात दिन मर-मर कर देना किसान
वक्र घरम नै रथा कब्भु धान व पिसान
गरीब धनी मिल्के बनल रहथा संसार
धान लेक भरल रथिस जिमदरवक धनसार
उह वर्से बुझक लाग, शोषकनसे झुकक लाग
एकता हमन कर पर्ना बा,
खुन चुसैया ... ...

भाँरा मिस छोडक उठी गाउँक दिदी बहिनी
डरुवा करछुल लेक धोलो सब बनो संगिनी
के हो हमार मित्र शक्ति बही हन चिन्ही
ज्याकर हम भाँरा मिस्थी उह हो बैगुनी
एक हाँथम डमरु लेक और हाथम करछुल लेक
डरूवा करछुल झटक पर्ना बा,
खुन चुसैया ... ...

उठो गरीब किसान कमैंया हाथम फरुवा लेक
हुल बाँध्क जाइबेर हमन किउ नै सेकी छेक
खाई नै पाक मुटी बाटी मुना नै हो डर
पाछ बैठक काम नै चल्टी आब त आग बढो
हर बनैना शीप देखाक, फरुवा कोर्नां बल देखाक

शोषक चिन्हक गाउँसे निकार देव
खुन चुसुइता शोषकह, मानव रुपी दानवह
वीरताके निशान देखा देव।

—:सपना:—

-कृष्ण राज चौधरी 'सर्वहारी'
देउखुरी छुट्की घुमना, दाङ

सपना ते मोर बडुवार रहे,
लेकिन नै बने सेक्लु कुछ।
दुई अक्षर पढे नैं सिख्के,
पाइतु खोब मनके दुःख ॥
।१।

बाबा कहे - पढे जा छावा
बन्बे डाक्टर - वकिल।
बाबक बात सुन्के
मही लागे झोक किल ॥

भईवा पढल बन राखल सैनिकके कप्तान
लडे जाईथ लेवनान साईबेरिया।
मै जुन कुलुवा कँटी लल्थुँ,
बनल वतुँ झलारिन्के अधरिया ॥
।३।

साछा पालनके पड्ल वा रीण,
धैले वतुँ बैंकमें जग्गा धरौटी।

पिठ निकरल झुलुवा घल्थुँ
तरे जुन लगौटी ॥
।४।

सपना ते मोर बडुबार रहे,
के ने का नै बन्ना ।
अपने मुराधी ऐसिन कर्मना कैनुँ,
खैथुँ रोतिदन मकैक भात व सन्ना ॥
।५।

कब्बु बन्थुँ सपनामे,
मैं बडुवार मन्त्री ।
डुले जैथुँ सपनामे
मै फरेन कन्ट्री ॥
।६।

लेकिन सपना - सपना हो ,
बिपना नै हुइथ ।
आपन अभागी कर्म देख्के
मोर मन एकदम रोइथ ॥
।७।

सपना ते मोर बडुवार रहे ,
लेकिन नै बने सेक्लुँ कुछ ।
दुई अक्षर पढे नै सिखके ,
पाइतुँ खोब मनके दुःख ॥
।८।

थारू जातिके परिचय

-बेचु लाल चौधरी
सप्तरी

थारू जाती नेपालके एक आदिबासी जाती चियैं। यी जाति नेपालके तराईमे पूरब मेची से पछिम महाकालीतैंक आवाद करने छैं । ततबे नैं विभिन्न भित्री मधेश आ खोंज सबमे थारूके बसोबास छैं। भारतके खिरी, भिखनाठोरी, बहराइच, गोण्डा, नैनिताल व लिमत्रीनगर, चम्पारन, लगायत कुछेक मात्रामे राजस्थान, उडिसा तथा अरूणाचल प्रदेशमे सेहो बसोबास करने छैं । यी जाती दोसर छट्टु जाति द्वारा शोषित हैतोमे दोसर जातिके बजिया कैहके आपन चौधरानी हस्ती कायम राखने छैं।

थारू जाति खासकैरके पाइनके आसपास अर्थात लदीलला, ताल–पोखैरके कीनारसे बसोबास करैछै। दी एकटा जातीय गुण चियै। थारूके घर दुवार ढुढुरा चिकनके निपल पोछल आ चुह्–चुह्न रहैछैं। घरके भित्ता सबमे कोबर माबरके विभिन्न बुट्टा बनाइले यी जाति बडा सिपालु हैंछैं। थारूके बस्ती घनगर आ संगठित तरिकासे बैसल रहैछैं। थारू जातिके वर्ण पिरसियाम आइख कारी, नाक थेपच केश सोझ, मलेरियाके कारण मुखडामे खोधर दाग, धर (टाङसे मुडीतैंक) ५ फीट से ६ फीट नाम्ह (खडा) हट्ठा कटठा देह, सकत मौस खान्हल शरिर रहैछैं। यी जाथि सुधुन प्रकृतिके हैछैं, कम आ धिरेधिरे बोलैंले रूबाबैंछे। माछ मारनाई, नाचगान करनाई, खलकूद वा शारिरिक अभ्यास करनाई थारू जातिके सौकिन गुण चियैं। मध्यम वर्गिन थारूसब दोसर पेसाके अपेक्षा खेतीपाती करनाई ज्यादा पसन्द करैछं।

थारू नेपालके आदिम जाति भेलाके कारण येकर आदिम भेष भूषा छैं, जे अखैनियो आन जातिके पहिरनसे नैं मिलैछैं। जेना पूरबके थारूमे पुरूषके धोती, जमा, महिलाके लहंगामे पुच्छर आ चोलिया। मध्यके थारूमे– पुरूषके धोती, जमा, महिलाके मारकीन सारी आ चोलिया। पछिमके थारूमे– पुरूषके धोती (लंगौटी) जमा महिलाके

गोनियाँ आ चोलिया आ सबसे पछिमके थारूमे पुरुषके धोती (लंगोटी) जमा महिलाके घाघर आ चोलिया पहिरनके चलन कायम छै। राना-थारूके महिला सबके पहिरन घघरिया, अंगिया चियै।

पूरबसे पछिमतक, नेपालसे भारततक थारू जातिके बोलीके लचकमे दूरी मुताबिक अन्तर छै। महज भाषा आ शब्दमे अन्तर नै छै। यी जाति झूठ बोबैले हिचकिच मानै छै, यी एकटा उच्च बैचारिक गुण चियै। थारू जाति आदिम कालसे आपन भाषा बोलैत येलछै।

नेपाल भारतके विभिन्न ठामके थारू जातिके खान-पानमे मेल छै। जेना- भात, दाइल, साग, तरकारी, माछ, मौस, घोङ्गही, सितुवा, काँखोर, कौछ यी सब भोजनके सामग्रीमे मिलान छै। तहिना- जाँड, दारू, मतवाली सामग्रीमे मिलान छै।

थारू जातिके विभिन्न परिचय मुताविक आपन संस्कृति छै। जेना- धुमरानाच, झुमरा नाच, सोरैठ नाच, मृतकाली नाच, मान (कृष्णलिला) माछी दंगाली नाच, लाटी नाच, मेजुर नाच देवकीलिला, सखिया नाच, छोकरा नाच, महोतिया नाच, खोनहा नाच, औरो औरो बहौतनाच छै। विभिन्न महिनामे विभिन्न मासके गीत प्रचलित छै। बैशाखमे वसन्त, जेठमे बिरहैन, अखारमे घर्षानी, साउन भादोमे बरमासा, आसिनमे झुमरी, कातिकमे चोरखेली, अगहनमे चाँचर, पुष माघमे पराती, फागुनमे फगुबा आ चैतमे चैताबारी गीत गाबैछै। पावैन तिहारमे जुरशितल (सिरूवा), बुद्ध जयन्ती, नागपचमी, चौठचाँन जनमअष्ठमी, जितिया, दशैं, सुकराती, तिलासंकराइत, फगुवा यी सब मनाइछै। गव पावैनके दिन धान रोपनी शुरू हैछै, कदपखार पावैनकें दिन रोपनी के अन्त हैछै। नेमान पावैनके दिन नया अन्न (धान) कटैके शुरुवात करैछै, खेतउतार पावैनमे कटनी अन्न करैछै।

सकल देखके, एक शब्द बोल सुइनके सहंजै थारू जातिके परिचय मिलसकैछै।

–०–

"कन्है"

कृष्ण कुमार चौधरी
धधवार गा. वि. स.–९ सेमरहवा, बर्दिया

प्रत्येक जात जातिनके आपन–आपन भाषा रहथ। भाषा कहना विभिन्न पक्षमा विभक्त बा अर्थात् भाषा कना एक शरीर हो, वाकर शरीरम विभिन्न अंग पाजाईथ। जस्त– कन्हैं, कहावत, बत्कोही इत्यादी। प्रत्येक पक्षके विकास करक पर्ना अवस्था आइल बा। उहमार हम्र स्याकल सम्म आपन भाषा विकासके लाग आग बढ पर्ना बा।

यीहाँ थारू जातिनमन प्रचलीत कुछ कन्हैं प्रस्तुत कर्ना जमर्को कै गैलबा कुछ गल्ती हुई फे स्याकथ। यी म्वार पहिलो लेखन हो। धेर नै सेक्ल से फे उन्ना कन्है रचना कंके आपन भाषाके घरमम कुछ ईट थप्ना कोशिस करतुँ।

१– आँग भर आँख–आँख छाब नै सेक्ना,
कहोंरे जाई लग्लसे बुकु नै छोरना का हो ?

२– गर्मी महिनम खुब घुमथुँ तर जार महिनम काम नै लग्ना जसिन बगैंथ कोन्वमन का हो ?

३– झ्याल ढ्वाका कुछु नै हो एक क्वरठम घरक, उ घरक आवाजसे आसपास सबकु चीनार करथ का हो ?

४– भुईयक उप्पर बैठना रूप वाकर चौराब्वा, खास कैक गरीबनके सब्से मजा संघरीया का हो ?

५– जत्रा लात लगैल्से फे उ केक्रो डर नै डरंथा, लात लगुईया हन हैरान लग्लसे फे ऐगा बा नै कथा का हो ?

६– गाल हेंर्बी बड़े टुनटुन सर्लक्क पर्ल जीउ, वाकर उप्पर मुन्टा धौक मौज खुब लैलिउ का हो ?

७– बोलाईबेर नै बोल्ना अप्ने केलिक ब्वालथ, बोल्ती जाईबेर मजा मजा बात ख्वालथ का हो ?

८– कहोंसे नेगती, घुमती, खसती, उ अइथा, मनैनके मजा–मजा खबर बोक्क नन्था का हो ?

९– भुन भुन कर्ति बोल्था नचती खेल्ती नेगथा, मेहनत करेक पर्ना शिक्षा हमन देथा हो ?

उत्तर– १) गैंजा २) ब्याना ३) मन्द्रा ४) गोन्द्री ५) भकुण्डो
६) सीरहन (तकिया) ७) रेडियो ८) चिट्ठी ९) मधरी

'मै का लिखुँ'

-कृष्ण प्रसाद चौधरी
बर्दिया, बेलभार

ऐना शनिबारके गोचालीके साहित्य गोष्ठी बा, कौनो लेख, कविता, गीत वतकोही लिखना के तयाँरी नै हो। साहित्य गोष्ठीम आपन मनके भावना, मनके वेथा, मनके बिचार लिखके सुनाई पर्ना जरूरी बा। तर अन्तिम दिन शनिबार ऐना त आभिन दूर बा। करीब एक हप्ता। ऐना शुक्रबार सम्मके लिख दरने वाटुँ का हडबड बाजे। दुई चार लाइन लिखके औपचारिकता निभइना त बा ! औपचारिकता नाही महीन दिन–रात काम कैंक खाए नै पैना एक आँगम लुगा लगाए नै पवीया जग्गा विहिन सुकुम्बासी तथा काम व माम वेरोजगारी मजदुरी हुकन। अत्याचारी दानव गरीबके खुन खवैया रक्त पिपासु हुकन से छुट्कारा पाइक लाग उठो जागो मोर गरीब किसान मजदुर हुक्र अत्याचार सहके नै बैठी कहही परी। आज आईतबार काल सोमबार के पाछ मंगलबार कति लग्ग आगिल शुक्रबार, हो गिल काल शनिवार। कत्रा हाली ऐलक हो न्यागबेरिक पैला गन अस। काम से फेन फुर्सद नै हो फुर्सद हुइल से फेन लिखना पढ्ना जाँगर नै लागथ। क्याकर विषयम लिखना हो। कुछ अर्थ–पर्थ नै हो। कुछ चिजके विषयम लिखना चिन्तन, मननके वास्ता नै हो। कब्भु कलमके टुप्पा कागजके पानाम धर्ल से पो लिख जाय। हमार थारू भाषाम उखान बा बन जाय ना बाघ धरखाए, ना एक दिन कलम पक्रो ना कापी, बन खोज्बो साहित्यकार।

आज शुक्रबारके संझ्या भरम एक ना एक चिजके बिषयम त लिखही परल काहुँ। मिझनी–उझनी खाए परल। कलम व कापी लेके एकान्त ठाउँम जाए परल आज जसिक फेन फुर्सद मिलैही परल। भला कब मिली काम से फुर्सद ? खेती पातीम केल आधारित रना, काम से कब्भु फुर्सद नै पैना जग्गा जमिन प्रशस्त रलसे फेन और घर अथवा जमिदारके घर खेती करही परल सर्वहारा मनै फेन किसान बनही परल। आखिर खेतीपाती से अन्न उब्जुइया किसान जमिनदार साहु महाजनके भकारी भरूइया फेन किसान, सेलर मीलसे टेलर मील

भरूइया किसान। तर किसानके घरम रात दिनके कमाही मजा (ब्रह्या) खैना नै हो।

एक आँग छोपना (ढक्ना) लुगा नैहो, मजा (ब्रह्या) खैना, थुन्यार लगैना त सपनाके बात हो। आपन जीउके स्वाथ्य, शिक्षा, सुरक्षा, रोजगारके ग्यारन्टी नै हो। आधारात मुर्गा बोली कामके घडी हो। भला कब हुई लिखना पढनाके फुर्सद। आव कलम पक्र परल कापीके पानाम रेखा त खीचही परल। आखिर मैं का लिखुँ ? हमार थारू भाषाम महाकाव्य, गीती कथा, कथा, लेख, समय, मौसम अनुसार के गीत जस्त– वडकीमार, मागर, धुमरू' धमार. बनगीत्वा, सीँगारू डफक गीत, पचरा, राम जलम, कृष्ण जलम आदि गीत, आधुनिक ग्रन्थ मिलठ। हमन भाषा तथा साहित्य सुधार करही पर्ना बा। बर्गीय शोषण अन्याय अत्याचार थिचोमिचो, जाली फठहनके विरोधके प्रचार करही परल। आखिर मैं का लिखुँ। मागर, बडकीमार, नच नचवा, धुमरू, सजना, कथा, बतकोही जौन लिखलसे फेन मही प्रगतिशील लिखही परल। काकर कि जमाना अनुसारके गीती स्थिति बोली चलन रीती, भाँट, समय अनुसारके गीत बास। आजकालके वैज्ञानिक युगम अन्ध विश्वासके कुरीती चालचलन रीती रिवाज, भेष–भुषाह फेर बदल कैख लौव प्रगतिशील समाजके सृजना कर पर्ना महशुस करही परी। मानव अधिकारके मुल्य चुकैही पर्ना बा। लौव समाजके सृजना करक लाग मानव अधिकार लिहक लाग त्याग तपस्या बलीदान दिहही पर्ना बा। आज प्रजातन्त्र आईल बा यीह प्रजातन्त्रके लाग तामाम वीर हुँक्र जेल नेलके यातना, भ्वाग पर्लीन वीर शहीद हुकन जीवनके बलीदान दिह परलिन। तर प्रजातन्त्र आइल क्याकर लाग ? जे मोठ मीठ बात कन्तन भुलाई सेक्ना लोभ्याई सेक्ना भाषण कर स्याकथ। जे धनवान पूँजीपती बा वाकर लाक आईल बा प्रजातन्त्र। उहँ बसेत अन्याय अत्याचार, शोषण दमन, गुण्डागर्दी, महंगी बेठ बेगारी झर्न–झन बढती बा। तर हमन ओसिन प्रजातन्त्रके आवश्यकता बा घरवार विहिन बेरोजगारी खाए लगा नै पाके प्याटीक लाग छटपटैना, लुगा नै पाके पुष– माघके ठण्डीम छटपटैना, औषधीं उपार नै पाके रोगके किराके शिकार बन्ना, शिक्षा रूपी दियाके प्रकाश नै पाके जहोंर तहोंर भहरैना, असुरक्षाके कारणसे दानव रूपी मनैनके शिकार बन्ना झनतनके लाग गाँस बास कपास स्वास्थ्य, शिक्षा व सुरक्षाके ग्यारेन्टी दिह सेक्ना प्रजातन्त्रके आवश्यकता बा। यीह प्रजा- तन्त्र प्राप्त करक लाग लौव समाजके सृजनाके लाग आपन हक व अधिकारके लाग संघर्ष कर्ना जरूरी बा।

राउवेद पैधार

बेबुरी बिनाएक झमकि उराब बिना बूदी तुमारों पास धनपति धन सुगाकै ठोर हृदषैस मोती देउ बहु भगवती सरण लेबु तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धन बा ॥१॥ राजक बेटी भए सम समरौटी सिकरी तुर जैस मै जल हाथी बाघ छैक जैंस कोपिला गाई दुधि बाघी छेक कोपिला गाई राउवेद द्रुपति लैआउँ जैरी नाउ धनरजिउ हो ॥२॥ देश २ राजा बोलाओ चौध जोजन भूईयांरे सोचाओ सोची साँची भूईया करै एक्क ठाउँ जेहिम गराउ राजा उत्तिम खाँर राउवे ी द्रुपति लैं आउँ जैरी नाउँ धनजिउ हो ॥३॥ देश २ राजा होरिला बोलाओ चौध जोजन भूइयाँ छोलाओ छोलछाल भूइया चापर हो जेहिम गराओ राजा उत्तिम खाँर राउवेद द्रुपति लै आउ जैरी नाउ धनजिउ हो ॥४॥ देश २ राजा गोबरा बोलाओ चौध जोजन भूईयाँ निपाओ निपिनापी भूईया सुचारहा जेहिन गराओ राजा उत्तिम खांर राउवेद द्रुपति लै आउ जैरी नाउ धनजिउ हो ॥५॥ जेहिम गराउ राजा उत्तिम खाँर उपर बाँध धजा निशान, जे राउ मारी भैया पहिला बाण जेही सम्पु कन्यादान राउवेद द्रुपति लौ आउ जैरी नाउ धनजिउ ॥६॥ राउरुपी राजा पंचानी रानी द्रुपति देखन चली जाय सरगक उपर डोमनिसान जलम भर मैं कन्यादान राउवेदी द्रुपति लैं आन सरगक उपर डोमनिसान जैरी नाउ धनजिउ हो। जलम भरमैं कन्यादान भरल कलस मोर हिया निसमा मै बरू रबुँ कन्यादान। एकतारकी एकतार रहो भैया राउ रक तार जसफल घुम कुमरकै चाख उईस घुम राउ हमार राउवेदी द्रुपति लैं आन जैरी नाँउ धनजिउ हो। राईरूपी राज पैंचानी चौदो सैं दूत कैल हकार जेराउ मारी भैया पहिला वाण जेही सम्पु कन्यादान राउवेदी द्रुपति लौ आन जैरी नाउँ धनजिउ हो। बारकोश राजउरौरूपा चौदकोश फौजमेरा व जेराउमारी भैया पहिला बाण जेहिम सम्पु कन्यादान राउवेदी द्रुपति लौ आन जैरी नाउँ धनजिउ हो। तोरे रौनागीर उठो मनसाई चरनाक,स कछाउ वरवेरा हम जाई देख राउ शरीर कैसिन बाटी राउ शरीर राववेद द्रुपति लौ आन जैरी नाउँ धनजिउ हो। एकसय आव एक बरूवेर हम जाई देख राउ शरीर मारू राउ देउँ गिरा रानी द्रुपति व्याह घर आन राऊ वेद द्रुपति लौआन जैरी नउँ धनजिउ हो। झुकल

बाण बैल श्री अकाश झुकल मेटकी फुट गई राशा हाँर गए दौना गीरराज हाथकी बाण सिलीमिली फिटकार राउदेव द्रुपति लौ आन जैरी नाउँ धनजिउ हो। बोली हो– हाई वो वारकवी धल कौरी जैसा। छोरतनु हीतस राउ चिरीया झुका देनु मोर हाथ जसनै रानी द्रुपति क भाग नै तोरे गंगेवा उठो मनसाई चरना कास कढाउ बरू बेर हम जाई देख राउ शरीर कैसिन बाटी राउ शरीर राउ वेद द्रुपति लै आन जैरी नाउँ धनजिउ हो। एक सय आओ एक बरू बेर हम जाई बेख राउ शरीर मारू राउ दिउ गिरा रानी द्रुपति ब्याह घर आन राउ वेद द्रुपति लौ आन जैरी नाँउ धनजिउ हो। झुकल बाण गैल श्री अकाश झुकल मेटकी फुट गिउरास, हारी गए गंगेवाराज हाथकी बाण सिलिभिली फिटकार राउवेद द्रुपति लौ आन जैरी नाउँ धनाजिउ हो। तेरा कारी कारी हेर भैया सरफा वाईस हैर दुखिस्तल राज तातल दुध भैयो पियो सराई तातल दूध पिओ ओठ जरी जाई राउ-वेद द्रुपति लौ आन जैरी नाउ धनजिउ हो। खकटा टुरी करवौ साखी कधुन टुरी कर जल्यौ बाभुन रूप धई अर्जुन नामै तोही बाँचु करण विर राज राउ वेद द्रुपति लौ आन जैरी नाउ धनजिउ हो। हाथ बैशाखी काँध कल्दौ बभुन रूप धई अर्जुन जा मैं तोही बांचु करण ीर राज गुनबाण मोही दक्षिणा दे राउ बेदी मोही दे गुनबाण मोही दक्षिणा देउ धनदरी मारी लेउ गुनबाण मोही दक्षिणा देबु भूई पिरथिया मागी लेबुँ। गुनबाण मोही दक्षिणा देबुँ धनदरी मारी लेबुँ राउवेद द्रुपति लौ आन जौरी नाउ धनजिउ हो। गुनबाण तोही दक्षिणा देबुँ राउ वेधी तैं मोही ने गुनबाण मैं दक्षिणा देबुँ राउ बेधी मैं बाभुन छत बभुनी हमार तैं कैस मागीस बभुनी हमार उह कुरू खेत करउँ वरी मार रक्षा रून बछि देउ राउ वेध द्रुपति लैं आन जैरी नाउँ धनजिउ हो। सोनकै मरूला लिह हाथोरमा पानी भर अर्जुन चली जा आग नाग वासुदेव मामा जाए मामा मोही माथ बुद्धि देउ। मैंरी कोटारी बहिनी तोर तैं मामा मै भंन तोर शीखा होखुँ मै ए मामा मोही माथ बुद्धि देउ मैंरी कोटारी बहिनी मार मैं मामा तु मैंन मोर मोर शिखा होख तुहार मैंन मोर माथ बुद्धि लागो। पानीक छाँ चीताउरेकी चीताउ वीर की बेधल शरीर बेधल वेधल भिउवाँ ड़ेरिया बेधलक राउ बेधल शरीर। बेधन बेधन द्रुपति सुन परेल बैठ उह रथ मान बाँह पकरी भेउवाँ लान धसीआई आप द्रुपति होईलो हमार राउबेध द्रुपति लैं आन जैरी नाउँ धनजिउ हो।

वडकिमार, संरौती पैधार

पूर्व सुमिरौ सुरुज भरार पश्चिम सुमिरौ रुनझुन देवी खडतार, उत्तर सुमिरौ हरि कबिलास लङ्का पवन सुमिरौं हनुमान, भगवती सरण लेबुँ तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।१। सरस्वती सुमिरौ ज्यूका ज्योति सुनो माता एक बिन्ती हमार पाण्डो कथ कहाँ लै जाउँ जहाँ सुनाउ जहाँ बासुकी नाग भगवती सरण लेबुँ तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।२। सरास्वती सुमिरौ गुरु प्रघट द्यो माता पिता सुमिरौ आद तुहार बरह धर्म पाप छई भगवती सरण लेबुँ तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।३। सरास्वती सुमिरौ पवनकै कोठी अरप दरप सुमिरौ गजमोती पाण्डो कथ रे कहाँ लै जाउँ जहाँ सुनाउँ जहाँ बासुकी नाग भगवती सरण लेबुँ तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।४। सोनकैरौ नी पितरकै कै ताँ ी रौ ी बजाओ उनमुन भाँती अपकी रौती अन्त हो पराउ नाउँ जिनी हुई हमार, भगवती सरण लेबुँ तुहार नाँउ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।५। सरास्वती सुमिरौ देवीक लेखा नकूर सुमिरौं तिलकू डाँर छाता लङ्का पवन सुमिरौ हनुमान लङ्का पवन सुमिरौ हनुमान भगवती सरण लेबुँ तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।६। सरास्वती सुमिरौ रकतुल माजर सातूल पातूल सात बहिनसे धर्म राज पूजा पनथु जलती हरी कुसूमा ले भगवती सरण लेबुँ तुहार नाँउ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।७। सरास्वती सुमिरौ गुहया संग साथी सवालाख सुमिरौ चौरासी कोईलर सुमिरौ घनअमराई सवालाख गुहयक खेल खेला भगवती सरण लेबुँ तुहार नाँउ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।८। जाक गोरखनाथ सुमिरौ वतर पाल वन सुमिरौ गैंडा अखबार खेत सुमिरौ बुढी दे डगर बैठे हरिपूजा ले भगवती सरण लेबुँ तुमार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ।९। पाँच पण्डावा देव सुमिरौ मई तोही हमरी गेर ी गर रक्षा करी रक्षी पाल गरक्षाकरो रक्षा पाल भूत बयाल जागन जी देव भगवती सरण लेबुँ तुहार नाउँ देखि धर्म देवी बन्धनवा ॥१०॥

यी "गोचाली" प्रकाशनके लाग सहयोगीनके नामावली :

क्रम संख्या :	नाम :	ठेगाना	: रूप्या
१–	श्री छल्लु प्रसाद चौधरी	बाँके, छटकपुरुवा	५००।–
२–	,, भैलो (पुरूष)	वा. नं. ८,९ धधवार, बर्दिया	३००।–
३–	,, भैली (महिला)	,, ,, ,,	२७१।५०
४–	,, खीम बहादुर चौधरी	वा. नं. ९ डफैया, बर्दिया	२०।–
५–	,, बुध राम ,,	धोबिया ,,	२०।–
६–	,, धर्म प्रकाश ,,	जोधीपुर ,,	१०।–
७–	,, दीवाकर ,,	सेमरहवा ,,	१०।–
८–	,, शिव लाल ,,	बैदी ,,	१०।–
९–	,, चतुर्भुज ,,	जोंसीपुर ,,	१०।–
१०–	,, दुर्गा प्रसाद ,,	,, ,,	१०।–
११–	,, चमारी ,,	,, ,,	५।–

थारू भाषा–साहित्य सुधार समिति–२०२८

पश्चिमांचल, नेपाल

सम्मान–पत्र

मोफसलमा रहेर पनि सरकारी बाधा अड्चनलाई पार गर्दै थारू भाषा साहित्य सुधार समिति, पश्चिमाञ्चल, नेपालको स्थापना गरी विगत दुई दशक भन्दा बढि समय देखि आफ्नै भाषा र जातिको सुधार तथा रक्षा गर्दै वर्गीय चेतना हुर्काउने प्रगतिवादी चिन्तनको विकास गर्न "गोचाली" पत्रिका प्रकाशन गर्ने तपाईहरुको महानकार्य अति उज्ज्वल र सराहनीय रहेको छ ।

अनेकौं बाधाहरु संग जुर्दै यथासम्भव उपायहरू बाट जातीय स्वाभिमान र वर्गीय चेतना हुर्काउन तपाईहरुले पूरा गर्दै आइरहनु भएको दायित्वपूर्ण र ओजिलो कार्यलाई आदर गर्दै सम्माननीय कवि युद्ध प्रसाद मिश्रको सम्झनामा जनस्तरमा स्थापित "युद्ध प्रसाद" मिश्र स्मृति पुरस्कार २०४९ ले सम्मान गर्दछौं ।

मिति :- २०५० फागुन ६ गते
काठमाण्डौ, नेपाल

प्रमुख अतिथि
रमेश विकल

संयोजक
त्रिरत्न शाक्य
युद्ध प्रसाद मिश्र पुरस्कार तथा प्रकाशन गुठी